ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५५ अंक - ६ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मार्च (द्वितीय) २०१४

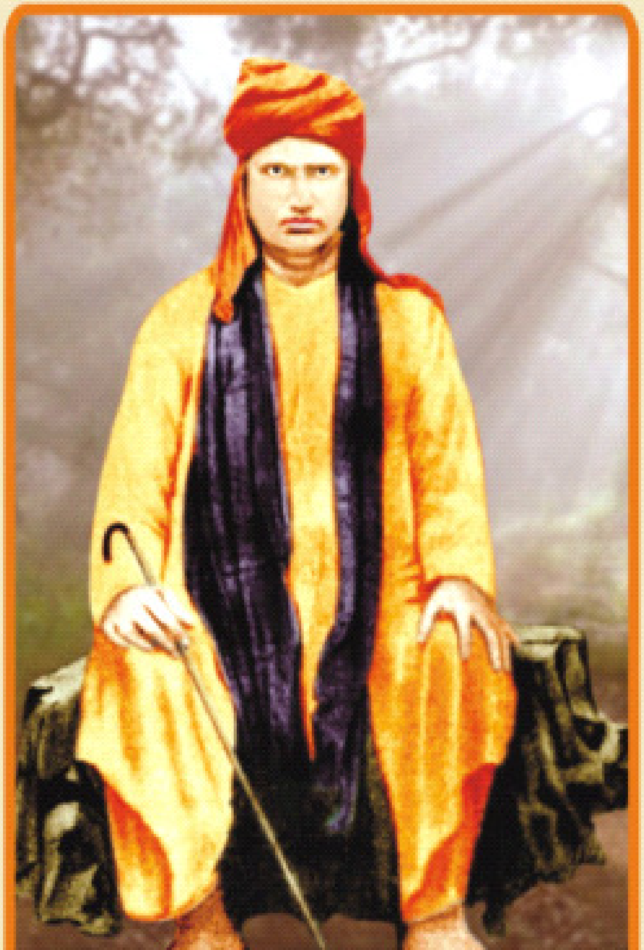

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

कार्यस्थल प्रबन्धन के सूत्र

पांच-सकार

पांच सकार अर्थात् सियरी, सिटॉन, सिसो, सिकेत्सु और शित्सुके। ये सुयोग्य व्यवस्था के पांच चरण हैं। इसमें वर्गीकरण तथा अनुशासन का समावेश है, जिसके द्वारा कार्यक्षेत्र में अच्छा परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

सियरी (छंटाई द्वारा पुनर्गठन)	कार्यक्षेत्र से आवश्यक व अनावश्यक वस्तुओं को अलग करना।
सिटॉन (सुव्यवस्था)	प्रत्येक वस्तु के लिए स्थान निर्धारित करना और उस वस्तु को उसी स्थान पर रखना।
सिसो (स्वच्छता)	कार्यक्षेत्र की अच्छी तरह सफाई करना और उसे स्वच्छ रखना।
सिकेत्सु (मानकीकरण)	उन नियमों का मानकीकरण करना जिनके पालन से सियरी, सिटॉन व सिसो में सफलता मिलती है। इससे सदृश्य प्रबन्धन होता है, जिससे त्रुटियों से बचा जा सकता है।
शित्सुके (अनुशासन)	प्रत्येक कार्य करते समय स्वानुशासन द्वारा नियमों का पालन करना और पांच सकारों को आत्मसात् करना।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मार्च द्वितीय २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५५ **अंक :** ६
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: चैत्र कृष्ण, २०७०
कलि संवत्: ५११४
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

अनुक्रम

१. वेण्डी डॉनिगर: झूठ के मुँह पर....	सम्पादकीय	०४
२. योगी भी सांसारिक सुख चाहता है	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
४. १८५७ की क्रान्ति के ऐतिहासिक....	विरजानन्द दैवकरणि	१५
५. क्या आप तैयार हैं?	रामनिवास गुणग्राहक	१७
६. राम सोमरस पीते थे सुरा (शराब)...	सुरेश चन्द्र त्यागी	२०
७. वेदों की बातें	रामप्रसाद शर्मा	२६
८. वीर सावरकर की प्रखर राष्ट्रभक्ति	डॉ. कैलाश चन्द्र	२८
९. वैदिक सूक्तियों में यज्ञ	अशोक आर्य	३२
१०. संयुक्त राष्ट्र के पुरोहित गण एड्स सम्बन्धित बीमारी के...		३४
११. जिज्ञासा समाधान-५९	आचार्य सोमदेव	३६
१२. संस्था-समाचार		४०
१३. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

वेण्डी डॉनिगरः झूठ के मुँह पर तमाचा

पेंगुइन एक प्रसिद्ध संस्थान है। प्रकाशन के क्षेत्र में इसका बड़ा नाम है। इसके प्रकाशन गुणवत्ता व प्रामाणिकता के लिए जाने जाते हैं। जैसे यूरोपीय व अमेरिकी संस्था अपने बड़प्पन के लिए जाने जाते हैं। परन्तु वास्तविकता में इन बड़े संस्थानों का एक मात्र ओछा उद्देश्य होता है- भारत की निन्दा करना, भारतीयता को निकृष्ट बताना, भारतीय जनमानस में आत्महीनता का भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न करना। विदेशों में भारत की छवि खराब करना, यह इन सभी संस्थाओं का छिपा हुआ उद्देश्य है। पेंगुइन भारत में वह संस्थान है जो भारत में अंग्रेजी भाषा की श्रेष्ठता और वर्चस्व स्थापित करने के लिए काम करता है। इसी तरह की संस्थाओं ने मिलकर हिन्दी भाषा को भ्रष्ट करके हिंगलिश के नाम पर भाषा से दुराचार किया है। पेगुंइन के प्रयत्न से भारत सरकार ने हिन्दी का स्वरूप विकृत करने के लिए संविधान विरोधी कार्य करने में सफलता प्राप्त की है। इन संस्थाओं ने प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह से संविधान के विरुद्ध भारत सरकार से एक आदेश पारित करवाया, जिसमें हिन्दी के प्रयोग में अंग्रेजी शब्दों की भरमार की गई। जिसके परिणामस्वरूप सारे समाचार-तन्त्र जी-जान से हिन्दी को हटाकर भारतीय जनमानस में अंग्रेजी शब्दों को ठूसने का प्रयास कर रहे हैं। समाचार तन्त्र अपने लेखन में रोमन लिपि और अंग्रेजी भाषा की भरमार करके अपने श्रोता को अंग्रेजी सीखने-समझने के लिए बाध्य कर रहे हैं। संविधान कहता है कि हिन्दी के लिए शब्दों का स्रोत संस्कृत व भारतीय भाषायें होंगी। परन्तु मनमोहन का आदेश कहता है कि हिन्दी के लिए अंग्रेजी व उर्दू के शब्दों का आश्रय लिया जाय, आज इसी आदेश का पालन सरकारी तन्त्र और अंग्रेजी समर्थक लोग कर रहे हैं। इस आदेश की प्रशंसा करने वालों में सबसे आगे पेंगुइन प्रकाशन ही था। इसने इस कार्य पर मनमोहन सिंह को बधाई देते हुए कहा था कि यह कार्य बहुत पहले हो जाना चाहिए था। अंग्रेजी की भारत में उपयोगिता और अनिवार्यता पर पेंगुइन ने पुस्तकें प्रकाशित की हैं। अपने कार्य के समर्थन में करोड़ों रुपये व्यय करके सम्मेलनों का आयोजन भी किया। पेंगुइन का उद्देश्य है इस देश में अंग्रेजी को औपचारिक भाषा की मान्यता दिलाना तथा हिन्दी और भारतीय भाषाओं के लिए रोमनलिपि को स्वीकार कराना। ऐसी संस्था के प्रकाशन जैसे होने चाहिए, वैसा ही प्रकाशन है दी हिन्दुजः ऐन ऑल्टरनेटिव हिस्ट्री इस पुस्तक की लेखिका एक अमेरिकी विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका है।

उक्त पुस्तक २००९ में छपकर आई तथा २०११ में इसके विरोध में शिक्षा बचाओ आन्दोलन के श्री दीनानाथ बत्रा के नेतृत्व में कानूनी कार्यवाही प्रारम्भ की गई, जिसके परिणामस्वरूप इस पुस्तक के प्रकाशक ने पुस्तक के प्रकाशन पर खेद व्यक्त किया तथा समस्त प्रतियों को वापस लेने और बची हुई प्रतियों के साथ इनको नष्ट करने का लिखित आश्वासन दिया। जिसे दोनों पक्षों ने मिलकर न्यायालय में प्रस्तुत किया तथा न्यायालय द्वारा उसे स्वीकार किया गया। यह कार्य पेंगुइन प्रकाशक तथा भारतीयता विरोधी लोगों के मुँह पर एक करारा तमाचा था। जिसकी झनझनाहट आजकल अंग्रेजी समाचार पत्र और तथाकथित प्रगतिशील लेखक समुदाय अनुभव कर रहा है। इस पुस्तक को प्रकाशकों ने वापस लेने की सोची। यह कोई सदाशयता का परिणाम तो था नहीं, परन्तु इस पुस्तक में ऐसी भूलें और जानबूझ कर निकाले गये मिथ्या निष्कर्ष हैं जो किसी भी परिस्थिति में न्यायालय में टिकने योग्य नहीं थे। इसलिए अपने बचाव के लिए प्रकाशकों के पास और कोई विकल्प ही नहीं था। इस घटना से उन लोगों को बहुत पीड़ा है, जो इन संस्थाओं और इनके संचालकों को सर्वशक्तिमान मान बैठे हैं। उनका मानना है कि प्रकाशक ने अपने दुमछल्ले लेखकों की रक्षा करने के स्थान पर पीछे हटना उचित समझा। यह शोध और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए काम करने वाले लोगों को हतोत्साहित करने वाला कदम है। वे सोचते हैं कि प्रकाशक को उच्च न्यायालय में जाना चाहिए। वहाँ भी प्रकाशक अपना बचाव कर सकते हैं, यह पूर्ण रूप से संदिग्ध है क्योंकि पुस्तक के तथ्य कहते हैं कि इसमें बचाव की सम्भावना नहीं है।

इस पुस्तक को पढ़ने से यह बात मिथ्या सिद्ध होती है कि तथाकथित प्रकाशक प्रामाणिक, शोधपरक और तथ्यात्मक काम का प्रकाश करते हैं। इसके विपरीत यह अवश्य सिद्ध होता है कि भारतीयों को नीचा दिखाने के लिये कितने भी घटिया स्तर तक उतर सकते हैं। वेण्डी डॉनिगर की पुस्तक में तथ्यात्मक भूलों की भरमार तो है ही, परन्तु कार्य में तटस्थता का भाव तो दूर, बल्कि उसके झूठे अर्थ करके पाठकों को बरगलाने का प्रयास स्पष्ट दिखाई देता है। पुस्तक के स्तर को समझने के लिए कुछ उदाहरण पर्याप्त होंगेः-

पुस्तक के मुखपृष्ठ पर जो चित्र दिया गया, उसमें शोध तो है नहीं, परन्तु विकृत कामुकता को प्रकट करने वाला चित्र बनाकर भारतीय देवी-देवताओं को लान्छित

किया गया है।

पुस्तक में भौगोलिक तथ्य, जो सर्वविदित हैं तथा जिन्हें पुस्तकों से प्रमाणित करना भी सरल है, ऐसे तथ्य गलत उद्धृत किये गये हैं- वजीरीस्थान को कहीं और दिखाया है, हल्दी घाटी को अपने स्थान से सैंकड़ों मील दूर बताया, जो बातें इतिहास में जैसी मिलती हैं, उसको मनमाने ढंग से बदलकर प्रस्तुत किया गया है।

पृ. ६७- लेखिका हडप्पा संस्कृति क्षेत्र की जनसंख्या कुल चार हजार मानती है, जबकि यह जनसंख्या मोहनजोदडो की थी। सारे क्षेत्र की जनसंख्या पांच लाख मानी जाती है।

लेखिका वेद और वैदिक साहित्य के विषय में सामान्य ज्ञान से भी वञ्चित है, वैसे ही यहाँ-वहाँ से ही नकल कर काम चलाया है। वेद के विषय पर इस देश के बन्धु जो वेदज्ञान से वञ्चित हैं, वे भी अंग्रेजी में लिखे वेदज्ञान से ही तत्वज्ञ बने हुए हैं। जो वेद ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति की बात करते हैं।

हमारा अपराध यह है कि हमने जब अपनी जनता को वेदज्ञान से वञ्चित कर प्रतिबन्धित कर दिया। हमने तो अपराध अवश्य किया, परिणामस्वरूप वेद को लेकर इस संसार में भी मूर्खता का वातावरण निर्मित हो गया, और आज वही अपराध पाश्चात्य लोग कर रहे हैं, वे वेद को न पढ़कर भारतीयों को मूर्ख सिद्ध करने में लगे हुए हैं। वेद के लिए लेखिका का ज्ञान देखिये-

पृ. ११२- गेंहू की उपस्थिति ऋग्वेद में खोज रही है। यह एक शब्द जिसे कोष में देखकर बड़ी सरलता से जाना जा सकता है। इसका प्रयोग मैत्रायणी=यजुर्वेद संहिता में जहाँ धान्यों का वर्णन है उसमें मिलता है।

पृ. १३० पर लेखिका कहती है ऋग्वेद में शूद्र देवता का उल्लेख नहीं है। उत्तर देने वालों ने उत्तर दिया है पूषन् व वास्तोष्पति शूद्र देवता हैं। यथार्थ में तो दोनों ही बातें मिथ्या हैं। क्योंकि जो पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से वेद पढ़ते हैं। वे वेदार्थ करने में बौद्धिक व्यभिचार के अतिरिक्त कुछ नहीं करते। वेद को पढ़ने के लिए निरुक्त पढ़ना आवश्यक है और निरुक्त कहता है कि वेद में देवता मन्त्रों की विषय वस्तु को कहा जाता है। या कहीं पर वस्तु के दिव्य गुणों को देवता शब्द से परिचित कराया गया है। देवता शूद्र हैं या देवता ब्राह्मण है यह कथन ही मूर्खता से परिपूर्ण है। जो लोग ब्राह्मण को ऊँचा, शूद्र को नीचा कहते हैं और मानते हैं कि ब्राह्मण ईश्वर के मुख से उत्पन्न हैं इसलिए श्रेष्ठ हैं और शूद्र पैरों से उत्पन्न हैं इसलिए नीच होने से त्याज्य हैं, तो अगले मन्त्र में परमेश्वर के मुख से अग्नि उत्पन्न होना लिखा है क्या ब्राह्मण के द्वारा अग्नि को गले लगा लेना चाहिए। वेद के प्रत्येक मन्त्र के ऊपर ऋषि, देवता, छन्द, स्वर लिखे जाते हैं, जिससे की उनको जानने और पढ़ने में सरलता हो।

पृ. ११२ पर लेखिका कहती है कि वेद में भाई-बहन में शारीरिक सम्बन्धों का होना पाया जाता है। उत्तर देने वालों ने यह तो लिख दिया कि कथन गलत है, परन्तु क्यों गलत है यह बात तो वे भी नहीं बता सकते। वास्तविकता तो यह है कि विधि-निषेध होने से यह सिद्ध नहीं होता कि निषेध का उपयोग विधि के रूप होता था। चोरी मत करो वेद में मिलता है तो यह अर्थ कैसे होगा कि वेद में चोरी करने का विधान है। यम यमी सूक्त में कहा गया है कि भाई-बहन में विवाह सम्बन्ध नहीं होने चाहिए, इसका यह अर्थ करना कि वैदिक काल में भाई-बहन का विवाह होता था यह बुद्धि का दिवालियापन है।

पृ. १२८ पर लेखिका वैदिक देवताओं का चित्रण पुरुष (बॉय फ्रैण्ड) और महिला मित्र (गर्ल फ्रैण्ड) के रूप में करती है और यह सिद्ध करती है कि ये देवता महिला मित्रों को धोखा देते थे और पुरुष मित्र से प्रेम करते थे। यह एक अज्ञान तो है ही, परन्तु विकृत मानसिकता भी है।

पृ. ५७१ पर लेखिका ने फिर मूर्खता प्रदर्शित की है। वहाँ वह लिखती है कि भगवान् ने महिला भक्त से बलात्कार किया। ऐसे लेखन से यही सिद्ध होता है कि लेखिका का शोध या सत्य की खोज से कुछ भी लेना-देना नहीं है, वह तो केवल यह बताने के लिए पुस्तक लिख रही है कि भारतीय समाज एक घटिया समाज है और जो कुछ भी करता है केवल कामान्ध होकर करता है। इस प्रकार भारतीय, हिन्दू लोग घटिया नस्ल और घटिया चरित्र के लोग हैं, यह सिद्ध करना इस पुस्तक का उद्देश्य है।

पृ. २०६ पर लेखिका लिखती है कि हिन्दुओं को केवल तीन संवेगों का ही पता था। यह अज्ञान से भरा वक्तव्य है। वैदिक साहित्य में षड् रिपुओं की चर्चा तो है ही, परन्तु ऋग्वेद का 'सप्त मर्यादा' मन्त्र तथा यजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय ही पढ़ा होता तो कुछ अज्ञानता कम हो सकती थी।

पृ. १९४ पर लेखिका को गाँधी जी का अनासक्ति योग आसक्ति योग लगता है। इससे ही लेखिका की भारतीय संस्कृति और साहित्य की योग्यता का पता चल जाता है। लेखिका शंकराचार्य के शास्त्रार्थ की चर्चा करते हुए कहती है कि शास्त्रार्थ में रानी ने शंकराचार्य को अपने साथ शय्याशायी होने के लिए कहा, जबकि इतिहास कहता है कि रानी के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए शंकराचार्य ने

अपने शरीर का त्याग कर मृतक राजा की देह में प्रवेश किया। इस प्रकार तथ्यों के साथ तोड़-मरोड़ को शोध नहीं कहा जा सकता। पृ. ४२ पर लेखिका का मानना है कि जैसे अमेरिका में वॉटरगेट काण्ड धन के लिए किया गया वैसे हिन्दू बन्दर और घोड़ों की नकल के लिए मशहूर हैं। रामायण के सन्दर्भ में राम या दशरथ को कामान्ध लिखना, शब्दों का गलत अर्थ करना, सन्दर्भ से हटकर बात करना ऐसी गलतियाँ इस पुस्तक में बहुत हैं।

पृ. ४६८ पर लेखिका मन्दिर और मस्जिद की तुलना करके मस्जिद की श्रेष्ठता सिद्ध करती है। यह केवल नीचा दिखाने का प्रयास है।

इसके अतिरिक्त तथ्यात्मक भूलें बड़ी संख्या में इस पुस्तक में देखी जा सकती हैं-

पृ. ४४१- लेखिका कहती है कि फिरोजशाह ने हिन्दुओं को गुलाम बनाकर बाद में उन्हें छोड़ दिया, तथ्य इसके विपरीत है। उसने एक लाख अस्सी हजार लोगों को दास बनाया और बारह हजार लोगों को मुसलमानों के लिए सामान बनाने के काम पर लगाया।

पृ. ४४५- लेखिका कबीर का समय १४५०-१४९८ बताती है, जबकि १३९८ का समय इतिहास मान्य है।

पृ. ४४२- लेखिका कहती है मुहम्मद बिन कासिम ने ७१३ में सिन्ध पर आक्रमण किया, जबकि तथ्य यह है कि आक्रमण ७११ में हुआ।

पृ. ४५० पर लिखा है कि अलाउद्दीन खिलजी ने कोई मन्दिर नहीं गिराया, जबकि समकालीन अमीर खुसरो ने लिखा है कि खिलजी ने बहुत सारे मन्दिर गिराकर उन पर मस्जिदें बनवाईं।

पृ. ५३२ पर लिखा है कि बंगाल के नवाब अलाउद्दीन हुसैन ने चैतन्य प्रभु को दरबारी बनाया, तथ्य यह है कि नवाब के अत्याचारों से तंग आकर उन्होंने अपना स्थान छोड़ा।

पृ. ४५९ पर लिखा है अकबर १५८६ में अपनी राजधानी फतेहपुर सीकरी से दिल्ली लाया, तथ्य यह है कि अकबर १५८७ को अपनी राजधानी लाहौर ले गया तथा वहाँ से आगरा लाया।

पृ. ५३७- गुरु गोविन्द सिंह की हत्या १७०८ में औरंगजेब के दरबार में जाते हुए हुई, जबकि तथ्य है कि औरंगजेब १७०७ में ही मर गया था। बहादुरशाह प्रथम द्वारा १७०८ में गुरुगोविन्द सिंह का बलिदान हुआ।

पृ. ५५० पर लिखा है कि मीराबाई का समय १४९८-१५९७ है।

पृ. ५६८ पर लिखा है कि मीराबाई का समय १४५०-१५२५ है, जबकि तथ्य है मीराबाई का समय १४९८-१५४७ है।

पृ. ५५२ पर लिखा है कि रामचरितमानस की रचना वाराणसी में हुई, तथ्य है कि रामचरितमानस की रचना अयोध्या में हुई है।

ये सब तथ्य उन लोगों की आँख खोलने के लिए पर्याप्त हैं जो अंग्रेजों द्वारा लिखी और अंग्रेजी में लिखी बातों को प्रमाण मानकर चलते हैं। यह अवसर इसलिये महत्त्वपूर्ण है कि झूठ को उचित समय और उचित स्थान पर आईना दिखाया गया है। हम गलत बातों की निन्दा तो कर लेते हैं पर प्रतिकार करने का प्रयास नहीं करते। यहाँ प्रतिकार का प्रयास किया तो झूँठ के मुँह को काला होने में देर नहीं लगी। पाश्चात्य लोगों की और उनके समर्थक काले अंग्रेजों की मानसिकता बन गई है कि उन्हें हर भारतीय बात गलत लगती है और अंग्रेजी में अंग्रेज की लिखी बात ईश्वरीय आदेश प्रतीत होती है। उन्हें हिन्दू संस्कृति, हिन्दू दर्शन, हिन्दू इतिहास को गाली देना स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति लगती है। ईसाइयत, इस्लाम पर टिप्पणी में साम्प्रदायिकता के कांटे चुभने लगते हैं। संभवत: किसी ने इन्हीं को ध्यान में रखकर कहा था कि अंग्रेजी में लिखा इनके लिए स्वत: प्रमाण है-

मन्थली वीकली डेली
पत्रैर्योरोप-निसृतै:।
यत् किञ्चिल्लिख्यते तद्वै
स्वत: प्रामाण्यमर्हति।।

- धर्मवीर

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण..........

योगी भी सांसारिक सुख चाहता है

- स्वामी विष्वङ्

अथर्ववेद में परमपिता परमेश्वर के लिए 'अकाम:' कहा गया है। अकाम का अर्थ कामना रहित लिया जाता है। कामना इच्छा होती है अर्थात् इच्छा रहित को अकाम कहा है। क्या ईश्वर में कोई इच्छा नहीं होती है? क्या ईश्वर में इच्छा मात्र का निषेध किया जा रहा है? क्या ईश्वर में इच्छा रूप गुण या धर्म अथवा स्वभाव नहीं है? कुछ लोग इस अकाम शब्द का यह अर्थ करते हैं कि ईश्वर में किसी भी प्रकार की कोई इच्छा ही नहीं है। इन सभी प्रश्नों का समाधान यह है कि लोक में अकाम शब्द का अर्थ कामना या इच्छा को जिस रूप में लिया जाता है, उस रूप में परमेश्वर में कोई इच्छा नहीं होती है। लोक में इच्छा या कामना का अर्थ क्या लिया जाता है? समाधान सरल वा स्पष्ट है कि अप्राप्त सुख को प्राप्त करने की और प्राप्त सुख को वैसा ही बने रहने की इच्छा प्राणी मात्र को होती है। इसी प्रकार प्राप्त दु:ख को दूर करने की और दूर हुए दु:ख को दूर ही बने रहने की इच्छा भी प्राणी मात्र को होती है। ऐसी इच्छा को लेकर सभी जीवित रहते हैं और ऐसा ही सबको देखते व अनुभव करते हैं। ऐसी इच्छा परमेश्वर में कभी नहीं हो सकती है। इसलिए लोग कहते हैं कि परमेश्वर में कोई कामना या इच्छा नहीं है, वह अकाम है। परन्तु इच्छा रूप गुण या धर्म या स्वभाव ही ईश्वर में न हो, ऐसा नहीं है अर्थात् परमेश्वर में इच्छा रूप गुण या स्वभाव सदा रहता है। ईश्वर इच्छा गुण रहित कभी नहीं हो सकता। हाँ, मनुष्यों वाली इच्छा नहीं होगी, फिर भी ईश्वर वाली इच्छा तो अवश्य रहेगी। ईश्वर वाली इच्छा क्या होती है और वह किस प्रकार की होती है? यद्यपि ईश्वर वाली इच्छा अप्राप्त को प्राप्त करने की नहीं होती है, परन्तु प्राणिमात्र को सुख पहुँचाने की इच्छा सदा रहती है और प्राणिमात्र के दु:खों को दूर करने की इच्छा भी सदा रहती है। इसी इच्छा के कारण परमेश्वर सृष्टि उत्पन्न करता है, सृष्टि की रक्षा-पालन करता है और जब सुख देने में सृष्टि असमर्थ होती है, तो उसका संहार या प्रलय भी करता है। ईश्वर की एक-दो इच्छाएँ नहीं हैं बल्कि अनेकों इच्छाएँ हैं। परन्तु वे सारी इच्छाएँ प्राणिमात्र के उपकार के लिए होती हैं, अपने (ईश्वर के) लिए नहीं होती हैं।

आध्यात्मिक मार्ग में चलने वाले व्यक्ति आध्यात्मिक बनकर योगाभ्यास प्रारम्भ करते हैं, तो उन्हें मन की गतिविधियाँ समझ में आती हैं। मन किस स्थिति में चंचल होता है, किस स्थिति में मूढ़ या विक्षिप्त होता है और किस अवस्था में एकाग्र होता है। मन की अवस्थाओं को जानकर समझकर एकाग्र अवस्था को उत्पन्न करने के लिए अष्टांग-योग का अभ्यास प्रारम्भ करते हैं। धीरे-धीरे योगाभ्यास को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लेते हैं। यम-नियमों का पालन सूक्ष्मता से करने लगते हैं। जैसे-जैसे यम-नियमों की सूक्ष्मता का बोध होता रहता है, वैसे-वैसे और गहराई से यम-नियमों का पालन करने लगते हैं। और यह पालन करने की स्थिति बिना रुकावट के लम्बे काल तक, निरन्तरता के साथ चलती रहती है। इतना ही नहीं, लम्बे काल तक, निरन्तरता के साथ-साथ तपस्या भी करते रहते हैं। वह तपस्या भी विद्यापूर्वक करते हुए आगे बढ़ते हैं। तप व विद्या के साथ-साथ ब्रह्मचर्य (संयम) का भी पूर्ण पालन करते हैं। तपपूर्वक, विद्या पूर्वक, ब्रह्मचर्य पूर्वक अभ्यास करते हुए पूर्ण श्रद्धा भी रखते हैं। जिस अभ्यास में लम्बा काल हो, जिस अभ्यास में बिना रुकावट के निरन्तरता हो, जिस अभ्यास में तप, विद्या, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा हो वह अभ्यास दृढ़-परिपक्व हो जाता है। अभ्यास के दृढ़-परिपक्व हो जाने पर मन को एकाग्र करने में समर्थ हो जाते हैं। मन के एकाग्र होते ही योगाभ्यासी के समक्ष जो भी पदार्थ सामने आते हैं, जिस किसी भी पदार्थ को अपने लक्ष्य के लिए साधन बनाते हैं। उन पदार्थों का विवेक कर लेते हैं अर्थात् उन तत्त्वों का यथार्थ बोध हो जाता है। जिससे योगाभ्यासी स्वयं (आत्मा) को और अन्य (जड़) पदार्थों को अलग-अलग समझ लेते हैं। इसे योग में '**सत्त्वपुरुषा-न्यताख्याति**' कहते हैं। अर्थात् सत्त्व (जड़) को और पुरुष (आत्मा) को अलग-अलग समझने लगते हैं। ऐसा समझना एकाग्र अवस्थाओं में कदापि सम्भव नहीं हो पाता है, यद्यपि विवेक क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त अवस्थाओं में भी होता रहता है। परन्तु वह विवेक '**सत्त्वपुरुषान्यताख्याति**' वाला विवेक नहीं होता है। '**सत्त्वपुरुषान्यताख्याति**' वाले विवेक से वैराग्य होता है और वैराग्य से समाधि लगती है। ऐसी समाधि क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त वाले विवेक से सम्भव नहीं है। एकाग्र अवस्था में जो विवेक होता है और वैराग्य होता है, उस विवेक और वैराग्य की स्थिति में योगाभ्यासी के मन में किसी भी जड़ व चेतन पदार्थ में राग, द्वेष व मोह नहीं रहते हैं।

योगाभ्यासी में राग, द्वेष व मोह के न होने से किसी

भी पदार्थ को प्राप्त करने की इच्छा नहीं होती है अर्थात् कोई कामना नहीं रहती है। यहाँ इच्छा का या कामना का न होना जो कहा जा रहा है, इसका अभिप्राय तृष्णा से है। योगाभ्यासी को **'सत्त्वपुरुषान्यताख्याति'** प्राप्त होती है, तो वैराग्य हो जाता है और वैराग्य होते ही तृष्णा समाप्त हो जाती है। महर्षि पतञ्जलि और महर्षि वेदव्यास वैराग्य की परिभाषा में लिखते हैं कि जो-जो अब तक प्रत्यक्ष अनुभव किया हो और जो-जो अब तक प्रत्यक्ष तो अनुभव नहीं किया हो परन्तु केवल सुना है कि ऐसे-ऐसे पदार्थ होते हैं। अनुभव किए हुए और सुने हुए पदार्थों के प्रति तृष्णा नहीं होती है अर्थात् उनकी इच्छा समाप्त होती है। संसार में इच्छा, अभिलाषा, कामना, तृष्णा इन शब्दों का प्रयोग करते हैं। यदि इच्छा, अभिलाषा, कामना, तृष्णा इन शब्दों का एक समान अभिप्राय लिया जाता है, तो वैराग्य को प्राप्त योगाभ्यासी में ऐसी इच्छा समाप्त हो जाती है। यदि तृष्णा और इच्छा के अभिप्राय को अलग-अलग किया जाये, तो वैराग्य को प्राप्त योगाभ्यासी में इच्छा कभी समाप्त नहीं होगी। हाँ, तृष्णा अवश्य समाप्त होती है। यहाँ पर इच्छा आत्मा का स्वाभाविक गुण-धर्म है और तृष्णा नैमित्तिक (किसी निमित्त से आने वाला) गुण-धर्म है। आत्मा की स्वाभाविक इच्छा आत्मा के समान सदा रहेगी। अर्थात् अप्राप्त सुख को प्राप्त करने की और प्राप्त सुख को बनाये रखने की इच्छा सदा रहेगी और प्राप्त दु:ख को दूर करने की और दूर हुए दु:ख को दूर बनाये रखने की इच्छा भी सदा रहेगी। ऐसी इच्छा प्रत्येक आत्मा में विद्यमान है। परन्तु तृष्णा उन्हीं व्यक्तियों में रहेगी, जिन में राग, द्वेष और मोह होते हैं। राग, द्वेष और मोह अविद्या के कारण होते हैं। क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त में अविद्या कार्यरत रहती है, इस कारण इन तीनों (क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त) अवस्थाओं में **'सत्त्वपुरुषान्यताख्याति'** उत्पन्न नहीं हो पाती है। जिस इच्छा में राग, द्वेष व मोह कार्यरत रहते हैं, उस इच्छा को तृष्णा कहते हैं। ऐसी तृष्णा वैराग्यवान् में नहीं होती है, परन्तु राग, द्वेष व मोह रहित इच्छा अवश्य रहती है। इसलिए स्वाभाविक इच्छा और नैमित्तिक इच्छा को अलग-अलग समझना चाहिए।

तृष्णा-युक्त मनुष्य और तृष्णा-रहित मनुष्य, दोनों भोजन, वस्त्र, मकान, वाहन, धन आदि सभी जीवनोपयोगी साधनों को प्राप्त करना चाहते हैं और प्राप्त करना भी चाहिए। परन्तु दोनों की चाह में अन्तर है एक की चाह में तृष्णा है, दूसरे की चाह में तृष्णा नहीं है। एक एकाग्रता के कारण विद्यापूर्वक (विवेक पूर्वक) पदार्थों की इच्छा करता है। दूसरा क्षिप्त, मूढ़ या विक्षिप्तता के कारण अविद्यापूर्वक (अविवेक पूर्वक) पदार्थों की इच्छा करता है। दोनों ही पदार्थों के प्राप्त होने तक पुरुषार्थ करते हैं, परन्तु दोनों के परिणाम अलग-अलग होते हैं। पदार्थों के प्राप्त न होने पर एकाग्रता वाले को किसी भी प्रकार का दु:ख, क्षोभ, चिन्ता, अशान्ति आदि नहीं होगी। परन्तु क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त अवस्था वाले को पदार्थों के प्राप्त न होने पर दु:ख, क्षोभ, चिन्ता, अशान्ति आदि अवश्य होती है। दोनों को पदार्थ प्राप्त हो रहे हैं, परन्तु जैसा चाहते हैं वैसा प्राप्त नहीं हो रहे हैं अर्थात् उनमें न्यूनता है या भिन्न स्तर के हैं। ऐसी स्थिति में एकाग्र वाले को अप्रसन्नता नहीं होती है, परन्तु क्षिप्त आदि अवस्था वाले को अप्रसन्नता अवश्य होती है। दोनों उत्तम स्तर के पदार्थों को चाहते हैं, परन्तु चाह को रखते हुए भी एकाग्र व्यक्ति विकल्प रखते हैं अर्थात् यदि उत्तम मिले तो अच्छा है। यदि किसी कारण न भी मिले, तो भी कोई बात नहीं, दु:खी कभी नहीं होते। इसके विपरीत क्षिप्त आदि अवस्था वाले को उत्तम न मिले तो अवश्य दु:खी होते हैं। हाँ, उनके दु:खी होने के स्तर अलग-अलग अवश्य होते हैं। कुछ लोग बाहर अभिव्यक्त करते हैं, कुछ अन्दर ही दबाये रखते हैं, कुछ को दु:खी होने का अनुभव नहीं हो पाता है अर्थात् वे विश्लेषण नहीं कर पाते हैं कि हमें दु:ख हुआ या नहीं। परन्तु दु:ख अवश्य होता है, यहाँ वे उस दु:ख को पकड़ नहीं पाते हैं। जीवनोपयोगी साधनों को प्राप्त करने की इच्छा, तृष्णा युक्त मनुष्य और तृष्णा रहित मनुष्य, दोनों में समान रूप से रहती है। अनेक बार दोनों के प्रयत्न एक समान दिखाई देते हैं। उस प्रयत्न को देखकर कुछ लोग यह अन्तर नहीं कर पाते हैं कि एकाग्र अवस्था वाले को राग, द्वेष या मोह युक्त समझने लगते हैं। यहाँ पर परीक्षा करने में दोष हो सकता है, परन्तु एकाग्र अवस्था वाले में दोष नहीं हो सकता। क्योंकि यदि एकाग्र अवस्था प्राप्त हुई है, तो **'सत्त्वपुरुषान्यताख्याति'** की स्थिति है। ऐसी स्थिति में राग, द्वेष व मोह कार्यरत नहीं रह सकते। यदि कार्यरत हैं तो एकाग्र अवस्था उत्पन्न नहीं हुई है। इसलिए एकाग्र वाले और क्षिप्त आदि अवस्था वाले दोनों की चेष्टा-प्रयत्न एक समान भले ही दिख रहे हों, तो भी एकाग्र वाले की तृष्णा रहित इच्छा ही समझनी चाहिए।

आध्यात्मिक मार्ग में चलने वाले एकाग्र अवस्था को प्राप्त हुए योगाभ्यासी यदि लौकिक कामना (इच्छा) करते हैं, तो अनुचित नहीं है। यहाँ पर लौकिक कामना (इच्छा) का अभिप्राय है- जीवनोपयोगी आवश्यक साधनों की कामना (इच्छा) करना। अर्थात् उत्तम भोजन, वस्त्र, मकान, आने-जाने के लिए वाहन आदि साधनों को प्राप्त करने की इच्छा रखना क्या अनुचित है? इसका समाधान है कि ऐसी इच्छा करना अनुचित नहीं है, क्योंकि साधनों को साधन

मान कर, साधनों को साधनों के रूप में ही प्रयोग किया जाये। उन्हें साध्य अर्थात् लक्ष्य के रूप में न माना जाये, तो अनुचित नहीं होना चाहिए। लौकिक कामना का होना इसलिए अनुचित नहीं होना चाहिए, क्योंकि उस कामना को आध्यात्मिक मार्गी कर रहे हैं। लौकिक कामना उचित और अनुचित दोनों हो सकती है। यदि लौकिक कामना को साधन मान कर साधन के रूप में प्रयोग चाहे लौकिक व्यक्ति करते हों, चाहे आध्यात्मिक व्यक्ति करते हों, दोनों के लिए उचित कामना ही रहेगी, अनुचित नहीं। इसके विपरीत चाहे लौकिक कामना हो, चाहे आध्यात्मिक कामना हो, यदि दोनों को साधन न मानकर साध्य-लक्ष्य के रूप में प्रयोग किया जाये, तो दोनों (लौकिक, आध्यात्मिक) के लिए अनुचित ही होगी, उचित कभी नहीं हो सकती है। जहाँ लोक में यह सुना जाता है कि आध्यात्मिक व्यक्ति को लौकिक कामना नहीं करनी चाहिए। उसका अर्थ अलग है, अर्थात् जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के अतिरिक्त अनावश्यक (जिनके बिना अध्यात्म में कोई व्यवधान नहीं आता ऐसी) वस्तुओं की कामना नहीं करनी चाहिए। यदि ऐसा कोई अनावश्यक कामना आध्यात्मिक व्यक्ति करता है, तो वह आध्यात्मिक व्यक्ति एकाग्र अवस्था वाला नहीं हो सकता, ऐसा समझना चाहिए। हाँ, आध्यात्मिक मार्ग में चलने वाले सभी एकाग्र अवस्था वाले नहीं होते हैं। उनमें क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त अवस्था वाले भी होते हैं, इसलिए क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त अवस्था वाले आध्यात्मिक व्यक्ति अनावश्यक लौकिक कामनाएँ कर सकते हैं। यदि ऐसा करते हैं, तो वे अनुचित करते हैं। अनुचित करने वाले आध्यात्मिक व्यक्तियों को और उचित लौकिक कामनाओं को करने वाले आध्यात्मिकों को मिलाकर दोनों को एक जैसा कभी नहीं समझना चाहिए।

एकाग्र अवस्था को प्राप्त योगाभ्यासी वास्तविक रूप में योगी बन जाते हैं, ऐसे योगी यदि लौकिक कामना करते हैं, तो उनकी लौकिक कामना लौकिक लोगों के समान नहीं होती है। बल्कि योगी की लौकिक कामना अभ्युदय सुख के लिए होती है अर्थात् वह कामना धर्मपूर्वक, न्याय पूर्वक और तत्त्वज्ञान युक्त होती है, जिस कामना में अविद्या नहीं रहती है और वह कामना जीवनोपयोगी होती है, भोग-विलास के लिए नहीं होती है। यहाँ पर अभ्युदय सुख का अभिप्राय राग से युक्त-आसक्ति से युक्त होकर जो सुख लिया जाता है, वह आसक्ति वाला सुख नहीं है। बिना आसक्ति वाले सुख को ही अभ्युदय सुख कहा जाता है, क्योंकि नि:श्रेयस रूपी मुक्ति सुख का साधन अभ्युदय सुख बनता है। यदि अभ्युदय सुख आसक्ति वाला होता तो मुक्ति का बाधक बनता। परन्तु बाधक न बनकर साधक बनता है, इसलिए योगी अभ्युदय सुख को पाकर ही मुक्ति सुख को पा लेता है। यदि कोई सोचे कि सांसारिक सुख प्राप्त करना या प्राप्त करने की इच्छा करना मुक्ति में बाधक है, तो क्या होगा? इसका समाधान यह है कि सांसारिक सुख न लेने पर योगी जीवित ही नहीं रह पायेगा। क्योंकि योगी को भोजन, वस्त्र, रहने का आश्रय-मकान आदि की आवश्यकता पड़ती है। भोजन आदि में सुख है और वे भोजन आदि पदार्थ सुख को हटाकर तो ग्रहण नहीं होते हैं। क्योंकि कोई भी वस्तु अपने गुण-धर्म से अलग नहीं हो सकती। इसलिए भोजन में सुख है और योगी भोजन तो करता ही है। भोजन में से सुख रूपी गुण को हटाकर केवल सुख रहित भोजन नहीं कर सकते। ऐसा सामर्थ्य योगी में नहीं है कि वह केवल पदार्थ ग्रहण करे और पदार्थ के गुणों को त्याग करे। इसलिए योगी सुखदायी वस्तुओं का प्रयोग जीवन-यापन के लिए अवश्य करता है और उन वस्तुओं के सुख को भी ग्रहण करता है और सुखी होता है। परन्तु सुख ग्रहण करते हुए उस सुख में राग उत्पन्न नहीं करता, जिससे राग के संस्कार बनें और उन रागात्मक संस्कारों से प्रेरित होकर पुन: उस सुख की तृष्णा करे। ऐसी भूल एकाग्रता को प्राप्त हुए योगी कभी नहीं करते हैं। योगी में और भोगी में यह ही एक विशेष अन्तर होता है कि योगी राग न बनाते हुए सुख लेता है और भोगी राग उत्पन्न करते हुए सुख लेता है। इसलिए योगी तृष्णाओं से मुक्त रहता है और भोगी तृष्णाओं से परिपूर्ण रहता है।

कोई यह शंका करे कि क्या बिना राग उत्पन्न किये सांसारिक सुख लिया जा सकता है? इसका समाधान है हाँ बिना राग उत्पन्न किये सुख लिया जा सकता है। क्या सभी मनुष्य राग उत्पन्न किए बिना सुख ग्रहण कर सकते हैं? नहीं, सभी मनुष्य नहीं कर सकते हैं। वह ही मनुष्य कर सकता है, जो एकाग्र अवस्था को प्राप्त हो चुका हो। जिसने मन की पञ्च (क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र व निरुद्ध) अवस्थाओं को जाना हो, जानकर मन को अपनी इच्छा के अनुरूप चलाया हो। वह मनुष्य ही मन की एकाग्र अवस्था को प्राप्त कर लेता है और वह ही **'सत्त्वपुरुषान्यताख्याति'** को पाकर वैराग्य से युक्त हो कर सांसारिक सुख को ग्रहण करता हुआ उस सुख में राग उत्पन्न नहीं करता है। बाकि क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त मनुष्य योग्यता के अनुसार न्यून-अधिक राग अवश्य उत्पन्न कर लेते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यदि सुख लिया, तो राग अवश्य होगा। यह नियम सब के लिए अनिवार्य नहीं है। हाँ क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त अवस्था वालों के लिए अनिवार्य हो सकता है, परन्तु एकाग्र अवस्था वालों के लिए यह नियम लागू नहीं होता। जिस प्रकार से मुक्त-आत्मा मुक्ति में ईश्वरीय आनन्द लेता हुआ

राग उत्पन्न नहीं करता, उसी प्रकार एकाग्र अवस्था वाले योगी सांसारिक सुख लेते हुए राग उत्पन्न नहीं करते। क्योंकि दोनों स्थितियों में तत्त्वज्ञान कार्य करता है और मिथ्याज्ञान कार्य नहीं करता। यहाँ मुक्ति में तो मिथ्याज्ञान होता ही नहीं है, परन्तु एकाग्र अवस्था वाले योगी में मिथ्याज्ञान कारण रूप में तो होता है। क्योंकि अभी उसे दग्धबीज अवस्था में नहीं पहुँचाया है। यहाँ यह नहीं समझना चाहिए कि यदि मिथ्याज्ञान कारण रूप में है, तो वह कार्य अवश्य ही करे। ऐसा नहीं है, कारण रूप में रहकर भी कार्य न करता हुआ देखा जाता है। जिस प्रकार बाल्यकाल में एक वर्ष के बच्चे में मिथ्याज्ञान के रहते हुए भी काम, क्रोध, लोभ आदि कार्य नहीं करते हैं। परन्तु कालान्तर में कार्य कर सकते हैं।

इसी प्रकार एकाग्र अवस्था वाले योगी में भी कारण रूप में मिथ्याज्ञान भले ही रहता हो, परन्तु कार्य नहीं करता है। हाँ, कालान्तर में कार्य कर सकता है। कालान्तर में कार्य करने का अभिप्राय यह है कि यदि एकाग्र अवस्था वाले योगी कालान्तर में अपनी एकाग्रता को खो दें अर्थात् क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त अवस्थाओं को पुनः प्राप्त हो जायें। ऐसी स्थिति में वह योगी नहीं रहेगा, तब मिथ्याज्ञान कार्य करने लगेगा। परन्तु जब तक एकाग्र अवस्था रहेगी तब तक मिथ्याज्ञान कार्य नहीं करेगा, भले ही मिथ्याज्ञान कारण रूप में बना रहे। इसलिए योगी जब तक संसार में शरीर धारण किये हुए रहेंगे तब तक सांसारिक सुखों को बिना राग उत्पन्न किये प्रयोग करते रहेंगे। और जब मुक्ति में जाते हैं, तब ईश्वरीय सुख को भी बिना राग उत्पन्न किये प्रयोग करेंगे।

निष्कर्ष यह निकलता है कि योगी हो या भोगी, प्रत्येक मनुष्य सुख की इच्छा करता है। चाहे वह सुख सांसारिक हो या चाहे ईश्वरीय मुक्ति सुख हो। हाँ, चाह में अन्तर अवश्य होता है, भोगी अविद्या (राग, द्वेष, मोह) से युक्त होकर चाह रखता है और योगी विद्या (बिना राग, द्वेष, मोह के) से युक्त होकर चाह रखता है। ध्यान रहे चाह (इच्छा) आत्मा का स्वभाव है। स्वभाव कभी आत्मा से अलग नहीं हो सकता। इसलिए योगी सांसारिक सुख की इच्छा मुक्ति पाने के लिए अवश्य करता है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आवासिकं संस्कृत–भाषा–शिक्षण–प्रशिक्षण–शिविरम्

लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखाया: परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।

अवधिः – २४-०५-२०१४ तः ३१-०५-२०१४ (अष्ट दिनात्मकम्)
(२३-०५-२०१४ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)

स्थानम् – ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्गः, अजमेर-३०५००१, दूरभाषः- ०१४५-२६२१२७०

योग्यता – संस्कृते रुचिमन्तः संस्कृत-आचार्याः, अध्यापकाः, संस्कृतछात्राः, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।

शुल्कम् – ३०० रुप्यकाणि।

व्यवस्था – एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
– बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिनः नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्रीः च आनयेयुः।

स्वरूपम्- शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
– संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यासः,

विशेष – **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

डॉ. धर्मवीरः
अध्यक्षः

डॉ. निरञ्जन साहुः
सचिवः
०९४१४७०९४९४, ९८२९१७६४६०

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

'कल्याण' के वार का स्वागतः– गुजरात के एक उत्साही आर्यवीर श्री कपिलदेव ओझा का परोपकारी द्वारा भेजा गया पत्र पाकर इस सेवक को अपार हर्ष हुआ। इस पत्र के साथ आपने गोरखपुर के 'कल्याण' मासिक में प्रकाशित एक लेख भेजा है। कल्याण के सन् २०१३ के किसी अङ्क में प्रकाशित 'नवधा भक्ति' लेख का परोपकारी में उत्तर देने की आपने माँग की है। इस लेख में श्री चक्र जी ने बड़ी चतुराई से एक कहानी गढ़कर आर्यसमाज पर वार-प्रहार करके सनातन धर्म की शंख ध्वनि की है। मिर्जा गुलाह अहमद भी कहानियाँ, नॉवेल गढ़कर हिन्दुओं पर वार किया करता था। इसी मिर्जाई कुटिल नीति को अपना कर कल्याण के संचालकों ने आर्यसमाज से छेड़छाड़ करने का नया इतिहास रचा है।

हम इस प्रहार का स्वागत करते हैं। 'कल्याण' ने इस प्रकार का उत्तर देने का हमें एक अवसर प्रदान किया है। हम प्रीतिपूर्वक, शिष्टता से, युक्ति व प्रमाण से आर्य हिन्दू जाति के हित में इसका उत्तर देते हैं। श्री ओझा जी ने इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया, वह भी धन्यवाद के पात्र हैं। एक लम्बे समय से परोपकारी आर्य धर्म, आर्य जाति तथा देश पर किये जाने वाले प्रत्येक वार का निर्भय होकर उत्तर देती आ रही है। हमारे जागरुक पाठक इस धर्म-रक्षा अभियान में 'परोपकारी' को ऐसी सामग्री भेजकर निश्चय ही पुण्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

'कल्याण' के लेखक ने आर्य समाज की शास्त्रार्थ परम्परा, शास्त्रार्थ महारथियों तथा आर्यसमाजियों की व्यंग्यपूर्ण भाषा में बहुत खिल्ली उड़ाई है। धारदार भाषा में वार करते हुए मनगढ़न्त कहानी का आरम्भ ऐसे किया गया है जैसे किसी जड़ को पूजने की अपेक्षा तो चेतन को ही पूजना अच्छा है। गंगासिंह ने तनिक आँखों पर बल देते हुए कहा। फिर चाहे वह पशु हो या पक्षी। उसमें हृदय तो है ही, वह भावना से प्रभावित होगा। लकड़ी-पत्थर पर सिर मारने में क्या रखा है। पक्के आर्यसमाजी के और दूसरे विचार हो भी क्या सकते हैं।

आगे लिखा है, इस पद्धति से तो शून्य में बड़बड़ाने या गुमसुम बैठने की उपेक्षा लकड़ी पत्थर भी भले रहेंगे। **वे कुछ हैं तो सही।** गणेश ने ईंट का जवाब पत्थर से दे दिया।

गणेश जी यह भूल गये कि 'Nothing is better than a wrong thing' अर्थात् उलट-पुलट अनुपयुक्त वस्तु से तो कुछ न होना ही ठीक है। विषाक्त भोजन करने से तो भूख सहना ही अच्छा है। पाषाण पूजा करने वाले सनातनी भक्त को ईशोपासना तथा ईश्वर की सत्ता तथा स्वरूप का ज्ञान बस इतना ही है। वेद शास्त्र ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् और कण-कण में, हर मन में, हर तन में ओत-प्रोत बताते हैं। इसे कल्याण का लेखक 'शून्य' घोषित कर रहा है। लकड़ी पत्थर के लिये कहता है, "**वे कुछ हैं तो सही।**"

सनातन धर्म के शिरोमणि साने गुरु जी लिखते हैं कि मूर्तियों को भोग लगाना व्यर्थ है। क्यों जी! व्यर्थ कैसे हो गये? लकड़ी पत्थर को भोग लगाना व्यर्थ बता दिया! यह तो आर्यसमाजपने की बात हो गई। डॉ. दवे ने 'द आर्ट ऑफ लाईफ इन भगवद्गीता' पुस्तक में लिखा है, वेद और उपनिषद् काल में भारत में पाषाण पूजा नहीं थी। तुम्हारे तुलसी बाबा की घोषणा है, '**बिन पग चले सुने बिन काना**' कहिये! यह आर्यसमाजीपना हुआ कि नहीं?

सन् १९२५-२६ में पौराणिक ब्राह्मणों के 'माधुरी' मासिक में एक प्रत्यक्षवादी महाशय ने 'ईश्वर बहिष्कार' विषय पर लेखमाला चला दी। उसने तुम्हारे स्वर्गों, नरकों, गरुड़ पुराण लकड़ पत्थर के भगवानों की तो धज्जियाँ उड़ाई साथ ही सच्चिदानन्द लक्षणयुक्त भगवान्-महात्मा तुलसी के '**बिन कर कर्म करे विधि नाना**' सर्वशक्तिमान की सत्ता का भी खण्डन कर दिया। तब काशी, प्रयाग, मथुरा, वृन्दावन के सब सनातनधर्मी, कथा कीर्तन करने वाले पण्डितों तथा शङ्कराचार्यों को कोई उत्तर नहीं सूझा। उस सङ्कट की घड़ी में सब तिलकधारियों का ध्यान स्वामी दर्शनानन्द की शास्त्रार्थ परम्परा के एक विद्वान् की ओर गया। मरता क्या न करता "शून्य में बड़बड़ाने वाले आर्यसमाजी गंगाप्रसाद उपाध्याय की शरण में सनातन धर्म आया। करबद्ध कहा, महाराज! आपने ग्रन्थरत्न आस्तिकवाद लिखा है। आप ही इस भयङ्कर लेखमाला का उत्तर दें। पक्के आर्यसमाजी ने पाँच पृष्ठ के लेख में नास्तिकता के ध्वजवाहक के सब तर्कों को झुठलाकर आपकी लाज बचाई। 'माधुरी' की फाईलों की खोज करके हमारे कथन के सच्चाई की जाँच कर लीजिये।

कल्याण के लेखक महोदय ने अपनी कहानी के किसी कल्पित आर्यसमाजी के 'मन की एकाग्रता' कथन पर भी हवा में तीर चलाये हैं। कृष्ण महाराज सामने खड़े थे और अर्जुन मन की एकाग्रता, वशीकरण का प्रश्न उठा रहे हैं। आप तो श्रीकृष्ण को भगवान् मानते हैं फिर अर्जुन

का मन क्यों न टिक सका? भगवान् तो सामने खड़े उसी से संवाद कर रहे थे।

बात वास्तव में यह है कि आपके लिये सच-झूठ की कोई कसौटी है ही नहीं। कुछ भी मानो-सब सनातन धर्म है। ऋषियों की बात सुनना चाहो तो बता देते हैं:-

'ध्यानं निर्विषयं मन:'।[१]

मन के निर्विषय होने के लिये आँख का विषय मूर्त्ति बाधक है कि नहीं? आपने अंग्रेजी के 'अटेंशन' शब्द को योग साधना का 'ध्यान' समझ कर अन्धविश्वास का व्यापार बना दिया है। गीता की दुहाई देते हुए आप यह मानते हैं कि आत्मा को कोई जला नहीं सकता। इसके टुकड़े नहीं हो सकते इत्यादि परन्तु आत्मा को ईश्वर का अंश मानते हो। ईश्वर के करोड़ों टुकड़े करके भगवान् को लहूलुहान कर रहे हो। आपको कौन समझावे? जगत् को मिथ्या मानते हो। जीव को ब्रह्म मानते हो फिर पूजा करने वाला कौन? पूजा किस की? भक्त और भगवान् का और भक्ति का प्रश्न ही कहाँ पैदा होता है? केवल एक ही सत्ता है और वह है ब्रह्म। कण्ठी, माला, तिलक, मूर्ति आदि तो सब मिथ्या हैं। जब जीव ही नहीं तो भक्ति कौन करता है? पक्के आर्यसमाजी की शास्त्रोक्त बात का कुछ तो उत्तर दो।

कल्याण में श्रीकृष्ण का ध्यान करते समय का फोटो छपा था। बताओ! श्रीकृष्ण तो स्वयं भगवान् थे वह किस का ध्यान करते थे? उस फोटो में सामने मूर्ति भी नहीं दिखाई गई फिर बिना मूर्ति के एकाग्रता कैसे हो गई? लगे हाथ यह भी बता दो कि अवतार कितने हैं। साई बाबा, सत्यसाई बाबा को आप अवतार घोषित कर चुके हैं? आपके एक स्थूलकाय बाबा जी तो बाबा रामदेव तथा श्री बालकृष्ण को भी अवतार घोषित कर चुके हैं तब उस सभा में सहस्रों सनातन धर्मी थे। किसी ने उनकी घोषणा का प्रतिवाद नहीं किया। आपने तिलक, कण्ठी, माला की महिमा भी बताई है। कौनसा तिलक लगाना सनातन धर्म है? वेदोपनिषद् में इनका विधान है क्या? वेदों में, उपनिषदों में, वाल्मीकि रामायण में, दर्शनों में और गीता में अवतार शब्द दिखा दो। क्या अवतारों के बिना मूर्तिपूजा टिक सकती है?

अब लीजिये शास्त्रार्थों की खिल्ली उड़ाने की आपकी सनातन धर्म रक्षा की नीति-रीति। महोदय! भक्त रामशरणदास जी की जीवनी पढ़िये। जाति भक्त भक्तजी ने पं. रामचन्द्र देहलवी का नाम लिये बिना हमारे शास्त्रार्थ महारथी की शास्त्रार्थों द्वारा धर्मरक्षा की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। तुम्हारे पं. गंगाप्रसाद शास्त्री ने सनातन धर्म की दुर्गति होते देखकर पक्के आर्यसमाजी पं. रामचन्द्र देहलवी को शास्त्रार्थ के लिए पुकारा या नहीं? राजा जयकिशनदास हैदराबाद को हमारे शास्त्रार्थ महारथी ने मुसलमान होने से बचाया या नहीं? हमारे शान्तिप्रकाश ने झोकोतरा (पश्चिमी पंजाब) में सनातन धर्म की पुकार सुनकर सहस्रों को विधर्मी बनने व गोमांस भक्षण से बचाया या नहीं? पादरी कुक भारत को ईसाई बनाने आया था। किसी तिलकधारी को उसके सामने खड़े होने की हिम्मत न हुई। ऋषि दयानन्द की शास्त्रार्थ की हुँकार सुनकर विदेश भागा या नहीं? निन्दक जीयालाल धर्मरक्षा के लिये उसका गुणगान करने पर विवश है। श्री शिवव्रतलाल राधास्वामी गुरु लिखते हैं कि चाँदापुर में पहली बार हिन्दुओं ने पादरियों व मौलवियों को शास्त्रार्थ में भागते देखा। कृतघ्नता पाप है। सत्य को स्वीकार तो करो।

महाराजा रणजीतसिंह के पुत्र महाराजा दिलीप सिंह को ईसाई बनाने वाला नीलकण्ठ शास्त्री था। पं. गंगाप्रसाद शास्त्री सनातन धर्म का विद्वान् नेता लिखता है कि काशी प्रयाग आदि तीर्थों पर कोई सनातनधर्मी नीलकण्ठ शास्त्री के लिए पादरी का सामना न कर सका। उसकी बोलती महर्षि दयानन्द ने ही बन्द की। सिख उसका सामना न कर पाये। आपके लिये हमारे शास्त्रार्थ महारथी आगे आये। ठाकुर अमरसिंह को सनातन धर्म सभा के प्रधान ने शास्त्रार्थ के लिये खड़ा करके सनातन धर्म की लाज बचाई या नहीं? चावापायल (लुधियाना) की रक्तरंजित धरती से पूछो शास्त्रार्थ समर के सेनानी पं. लेखराम ने लहू से उस धरती को सींच कर धर्मच्युत होने वालों को बचाया या नहीं? मेधातिथि सरीखा शूरवीर भारत माता का दुलारा प्यारा रक्षक बटाला (पंजाब) में एक शास्त्रार्थ में पं. शान्तिप्रकाश जी के सामने खड़ा किया गया। लेखराम नरनामी के योद्धा शान्तिप्रकाश ने जमायत इस्लामी के मौलाना को पं. मेधातिथि बनाकर एक स्वर्णिम इतिहास रच दिया। यह स्वर्णिम इतिहास लम्बा है। शेष फिर कभी लिखेंगे। कृतघ्नता के पाप से बचो।

जब मैं कल्याण के कार्यालय गया:- कुछ वर्ष पूर्व मैं दो बार 'कल्याण' के कार्यालय गया था। मैंने तब पुस्तक बिक्री विभाग में सबसे कहा कि काशी रामनगर (जहाँ काशी के राजा का महालय है) के एक मौलाना ने गीता के पुनर्जन्म सिद्धान्त के खण्डन में पुस्तक लिखकर श्री कृष्ण, कणाद, गौतम सबको झुठलाया है। श्री कृष्ण की लाज बचाओ। आपके पास उत्तर देने के लिये कुछ है तो दीजिये यदि नहीं तो उसका खण्डन करो। कुछ लिखो। कल्याण ने चुप्पी साधने में ही अपना भला जाना व माना। हमने परोपकारी में युक्ति, तर्क व प्रमाणों से उत्तर प्रत्युत्तर देकर विरोधियों को ललकारा। क्या भूल गये?

आर्यसमाज पर प्रहार करने का पुण्य तो सदा प्राप्त

करते आये हो कभी कृतज्ञता का प्रकाश करना भी सीखो। आपने तो आर्य हिन्दू जाति के गौरव के लिये गीत, पुनर्जन्म सिद्धान्त व श्री कृष्ण की रक्षा में परोपकारी में छपा वह लेख छापने की भी बुद्धिमत्ता व उदारता न दिखाई। अच्छा! कोई बात नहीं आप वार करते रहिये। हम बुरा नहीं मानेंगे। उत्तर देते रहेंगे। सेवा का अवसर देते रहिये। भगवान् आपका भला करे।

जरा छेड़े से मिलते हैं मिसाले ताले तम्बूरा।
मिला ले जिसका जी चाहे बजा ले जिसका जी चाहे।।

राव युधिष्ठिर सिंह-इतिहास दर्पण:- आर्यसमाज के गौरवपूर्ण स्वर्णिम इतिहास की खोज व सुरक्षा सूझबूझ वाले श्रमशील युवकों की सेवा व समय माँगती हैं। कल्पित कहानियाँ गढ़कर उन्हें 'अज्ञात सामग्री' का नाम देना कोई इतिहास नहीं है। जीवन पल-पल, क्षण-क्षण बीता जावे। यह जानकर मैं दिन-रात एक-एक पृष्ठ उलट-पुलट कर विस्मृत आर्य पुरुषों के इतिहास की खोज में लगा हूँ। मरते दम तक यह सेवा करने की चाह है। ऋषि जीवन में राव युधिष्ठिर सिंह जी के इतिहास की कुछ नई सामग्री दी है। रेवाड़ी विषयक एक परिशिष्ट छपने से न जाने कैसे रह गया। अभी कुछ और सामग्री मिली है। राव युधिष्ठिर सिंह नाम के नहीं प्रत्युत एक स्वाध्याय प्रेमी निष्ठावान् आर्य थे। मेरठ से निकलने वाले 'आर्यसमाचार' मासिक के आप नियमित पाठक थे। आर्यसमाज के इस लोकप्रिय पत्र को आप आर्थिक सहयोग किया करते थे। यह जानकारी इस सेवक को सन् १८८४ के आर्य समाचार के एक अंक से मिली है।[२] इस समाचार से यह आनन्ददायक समाचार पता चला है कि आपने स्वयं स्फूर्ति से अगले वर्ष का अग्रिम शुल्क भेज दिया।

स्वामी भीष्म जी दादा शिवनारायण फूलसिंह जाट जुलानी वाले की गोरक्षा की साहसिक व प्रेरणाप्रद गाथा की चर्चा किया करते थे। अंग्रेजों तथा विधर्मियों ने उस बलिदानी को **डाकू फूलसिंह** प्रचारित कर रखा था। प्राण तली पर धर कर व कसाइयों से लोहा लेता रहा। आर्य नेता स्वर्गीय मित्रसेन जी आर्य रोहतक की पत्नी इसी धर्मवीर ऋषि भक्त फूलसिंह के कुल से हैं। यह तथ्य मैंने एक लेख में दे दिया था। सम्भवत: स्वामी धर्मानन्द जी ने मेरा वह लेख कहीं छपवा दिया था।

हरियाणा के आर्यों का कर्त्तव्य बनता है कि गाँव-गाँव में जन-जन को यह बताया जावे कि धर्मवीर फूलसिंह ऋषि के जीवन काल में आर्य धर्म में दीक्षित हुआ था। यह रणबाँकुरा भी 'आर्य समाचार' परिवार का सदस्य था। आर्य समाचार के पुराने अंकों से ही यह पता चला। मुझे टोहाना के पुराने आर्य 'भक्तजी' ने ५७-५८ वर्ष पूर्व वह स्थान दिखाया था जहाँ कभी गो घातियों से प्राणवीर फूलसिंह का रक्तिम संघर्ष हुआ था।

पं. लेखराम केरल में:- आर्यवक्ता भजनोपदेशक धर्म पर बलिदान देने वालों की चर्चा न करने का पाप कमा रहे हैं। धर्म प्रचार में आगे आने व कष्ट सहन करने की प्रेरणा कहाँ से मिलेगी? उत्तर भारत में पं. लेखराम जी शहीद शिरोमणि का कोई स्मारक नहीं बचा। हर्ष का विषय है कि केरल में एक दूरस्थ स्थान के मुट्ठी भर आर्यों ने पालघाट जनपद में 'पं. लेखराम स्मृति भवन' का निर्माण करके उसे धर्म रक्षा की छावनी बना लिया है। मैं बिना आरक्षण के अपनी जेब से मार्ग व्यय लगाकर बीसियों बार केरल प्रचारार्थ गया। मुझे मेरी कष्टप्रद यात्राओं का आनन्ददायक पुरस्कार मिल गया।

अकोला महाराष्ट्र में परोपकारिणी सभा के संरक्षण में कुछ उत्साही आर्यवीरों ने पं. लेखराम वैदिक अभिलेखागार की स्थापना करके बहुत ठोस कार्य कर दिखाया है। उनकी सेवाओं की जानकारी अगले ऋषि मेला में हम नहीं देंगे- उनकी उपलब्धियाँ बोलेंगी। मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने कभी लिखा था:-

"Works speak louder than words."

उपलब्धियाँ और आचरण शब्दों से कहीं ऊँचा बोला करते हैं।

शाहपुराधीश नाहरसिंह की दूरदर्शिता:- आर्यसमाज में प्रवेश के थोड़े समय पश्चात् लाला जगन्नाथ मुरादाबादी ने 'पोपलीला' नाम से एक पुस्तिका छपवाई। यह पद्य में है। इसमें सभी मूलभूत वैदिक सिद्धान्तों का मण्डन और अवैदिक मतों विशेषरूप से पौराणिक विचारों का खण्डन है। महर्षि की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है। लगता है आर्यसमाज से निष्कासित होते ही जगन्नाथ ने इसकी सब प्रतियाँ जला दीं। राजवीर जी, अमरनाथ जी तथा इस सेवक ने मुरादाबाद के दो बड़े-बड़े पुस्तकालयों की एक-एक पुस्तक छान मारी परन्तु यह कृति हमने वहाँ न पाई। न जाने श्री नाहर सिंह जी को एक प्रति कहाँ से मिल गई। आपने सद्धर्म विचार नाम से दो बार छपवा कर यह वितरित की। दुर्भाग्य से राजस्थान में भी किसी ने इसका ऐतिहासिक महत्त्व न पहचाना। शाहपुरा राजस्थान के वयोवृद्ध आर्य पुरुष श्री सोहनलाल जी शारदा ने इसकी एक प्रति बचा ली। आपने इसकी महत्ता जानकर श्री सभा मन्त्री को यह ज्ञानराशि सौंप दी है। अब सभा इसका प्रकाशन कर रही है। हम श्री नाहरसिंह जी के आर्यत्व व दूरदर्शिता को नमन करते हुए श्री सोहनलाल जी शारदा के प्रति भी कृतज्ञता का प्रकाश करते हैं। पुस्तिका में बहुत कुछ है। यहाँ क्या-क्या दें? जगन्नाथ ने ऋषिद्रोही बनकर अभद्र भाषा में जी

भर कर ऋषि की निन्दा की। पासा पलटते ही उसे सब वैदिक सिद्धान्त चुभने लगे। जो जगन्नाथ काशी शास्त्रार्थ में महर्षि की विजय पर इतराता था अब पोप मण्डली का बाजा बन गया।

आर्यसमाज के इतिहास का एक लुप्त गुप्त अध्याय:– हम शीघ्र ऋषि जीवन से जुड़ा आर्यसमाज के इतिहास का एक लुप्त गुप्त अध्याय प्रकाश में लायेंगे। ऋषि जीवन पर कार्य करते हुए पर्याप्त दस्तावेज इधर–उधर हो गईं। उनका ज्ञान तो था परन्तु ठीक–ठीक प्रमाण सामने रखकर ही लिखना उचित जाना। केवल स्मृति के आधार पर लिखने से चूक की सम्भावना बनी रहती है। दयानन्द आश्रम की स्थापना के समय २९ दिसम्बर सन् १८८३ से लेकर ३० अप्रैल सन् १८८४ तक प्राप्त दान की सूची परोपकारिणी सभा के उप मन्त्री श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्डिया ने 'आर्य समाचार' मासिक के आषाढ़ संवत् १९४१ में छपवाई। इस अंक के पृष्ठ ७८–९१ तक प्रकाशित इस सूची में दो सौ ग्यारह दानदाताओं के नाम छपे मिलते हैं। इन नामों को पढ़कर गौरव भी होता है और यह सूची इतिहास में घुसेड़े गये एक प्रचारित झूठ की पोल भी खूब खोलती है।

इन २११ दानदाताओं में १११ दानदाता उदयपुर मेवाड़ राज्य से हैं। राव बहादुरसिंह जी तथा नाहरसिंह जी के नाम भी हैं। फर्रुखाबाद तथा फीरोजपुर (पंजाब) से भी कई एक के नाम हैं। जयपुर, अमृतसर, लाहौर, बरेली, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, शिमला, कसौली, मुरार से भी दान प्राप्त हुआ। भक्तप्रवर ठाकुर भोपालसिंह तथा ठाकुर मुकन्दसिंह के नाम भी इस सूची में है। कर्नल प्रतापसिंह व जोधपुर के राज परिवार का बाजा बजाने वालों को हम बताना चाहते हैं कि **जोधपुर से किसी ने एक खोटा पैसा भी नहीं भेजा।** जोधपुर में भी तब कोई तो ऋषि भक्त होगा ही। राज परिवार से भयभीत प्रजा में से भी किसी ने ऋषि के नाम पर दान देने की हिम्मत न दिखाई। पाठक चाहेंगे तो हम यह सारी सूची सार्वजनिक कर देंगे। दानियों में मेवाड़ राज्य के ग्यारह मुसलमान तथा एक अंग्रेज भी है।

'अवध रीवियु मासिक':– अवध रीवियु मासिक का मई सन् १९०२ का अंक हमारे सामने है। इसमें कर्नल प्रतापसिंह का जीवन परिचय छपा है। इन्हीं के द्वारा सामग्री भेजी गई लगती है। इसमें ऋषि के जोधपुर आगमन तथा ऋषि के नाम तक की चर्चा नहीं। केवल शिकार तथा अंग्रेजों की कृपा तथा गुणगान मिलता है। प्रतापसिंह की ऋषि भक्ति की कहानियाँ गढ़–गढ़ कर भ्रमित करने वाले इस पर टिप्पणी करेंगे तो हम स्वागत करेंगे।

इतिहास प्रदूषित मत करें:– एक प्रेमी ने पूछा है कि आपने ऋषि जीवन में लिखा है कि आर्य अनाथालय लाला मथुरादास ने स्थापित किया। ऋषि जी का आशीर्वाद अवश्य था परन्तु आर्य जगत् में उसके स्थापना दिवस पर इसे महर्षि द्वारा स्थापित किया गया छपा है। सत्य क्या माना जावे? हमारा उत्तर है कि जो मन माने सो मानो। हमारा दोष तो केवल इतना ही है कि हम इतिहास के विद्यार्थी थे व हैं। हमने परोपकारिणी सभा तथा प्रिय अनिल को अनाथालय के आरम्भिक वर्षों की रिपोर्टें भेंट कर दी हैं। उन्हें देख लेवें। सन् १८८४ के आर्य समाचार के एक अङ्क में लाला मथुरादास जी को ही संस्थापक[३] बताया गया है। प्रामाणिक जानकारी देना अपराध है तो फिर हम अपराधी हैं। दोषी हैं। जो चाहें सो दण्ड दीजिये।

टिप्पणियाँ

१. सांख्य दर्शन ६–२५

२. द्रष्टव्य 'आर्य समाचार' उर्दू मासिक पोष सम्वत् १९४१ पृष्ठ २८९

३. द्रष्टव्य 'आर्य समाचार' मार्गशीर्ष सम्वत् १९४१ पृष्ठ २३७

– वेद सदन, अबोहर–१५२११६ (पंजाब)

पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया

सभी विद्वानों व परोपकारी के सुधी पाठकों से निवेदन है कि अपना नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता (पिन कोड सहित), दूरभाष संख्या और ई–मेल किसी भी माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें जिससे कि परोपकारिणी सभा के वर्तमान के पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया में सहयोग मिल सके।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

१८५७ की क्रान्ति के ऐतिहासिक दस्तावेज

- विरजानन्द दैवकरणि

प्रत्येक शरीरधारी जीव स्वतन्त्र रहना चाहता है। संसार में प्राय: देखा जाता है कि शारीरिक बल और आर्थिक प्रभुता के कारण ही समर्थ लोग अशक्तों को पराधीन बनाये रखते आये हैं। ज्ञान के आधार पर कोई किसी की पराधीनता स्वीकार करता हो, ऐसा उदाहरण बहुत कम देखने में आता है। नीतिकारों ने कहा है-

सर्वं परवशं दु:खं सर्वमात्मवशं सुखम्।

दूसरे के आधीन रहना दु:ख है और स्वतन्त्रता में सुख है।

जैसे व्यष्टि की स्वतन्त्रता-परतन्त्रता होती है, इसी भाँति समष्टि (समाज) की भी स्वतन्त्रता-परतन्त्रता हुआ करती है। परतन्त्र व्यक्ति और समाज स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु सदा यत्नशील रहता है। विश्व के अनेक देश इसके उदाहरण हैं। विजेता शासक विजित जाति के लोगों पर शासन स्थापित करने तथा अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिये विविध अत्याचार करता रहता है। भारत की शान्तिप्रिय जनता को पराधीन करने तथा लूटने के लिये अंग्रेज लोगों ने मनमाने अत्याचार किये हैं।

ऐसे अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिये भारत की जनता ने सन् १८५७ में एक महान् यत्न किया था। उस के लिये तत्कालीन समाज की परिस्थिति के अनुरूप लोगों ने जो प्रयास किये थे, उसकी एक झलक निम्नलिखित ऐतिहासिक पत्रों के द्वारा मिलती है। इन पत्रों की ऐतिहासिकता किसी की दृष्टि में सन्देहास्पद हो सकती है, परन्तु इनमें अभिव्यक्त भावनाओं का मूल्यांकन करना और बात है। उस समय के लोग अपने ज्ञान और सामर्थ्य के अनुकूल जैसा यत्न कर सकते थे, वह इन पत्रों के माध्यम से जाना जा सकता है। हमें इतिहास की सामग्री संकलित करते समय निम्न छ: पत्रों की प्रतिलिपि प्राप्त हुई है, जिन्हें अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। इसी प्रकार के पत्रों से देश में जनजागरण हुआ और मई १८५७ में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये जनता कुछ करने के लिये मचल उठी। इसी जोश के कारण अंग्रेज शासकों को एक करारा झटका लगा। उन्होंने भयंकर अत्याचार करके जनक्रान्ति को दबाना चाहा। परन्तु क्रान्ति की वह चिनगारी भीतर ही भीतर सुलगती रही और स्वतन्त्रता की हवा से भीषण दावानल का रूप लेकर कालान्तर में अंग्रेज शासन को भस्म करके ही शान्त हो पाई।

१. ओम् श्री गणेशाय नमो नम:

देश के पुत्रो! भाइयो! ऐसा समय आ गया है कि हम सब लोग मिलकर अपने देश के बादशाहों और दूसरे लोगों के हुकम को मानें और अपने देश के सच्चे दुश्मन अंगरेज को जिसे फिरंगी भी कहते हैं, इनके राज को हटाकर देशवासी राज बनावो। सारे देश को इन्होंने लूट खाया है। आज भी ये इसी फिकर में रहते हैं कैसे लूट-खसोट की जाय। नाना साहब की बात मानकर ३० मई को एक साथ सारे फिरंगियों को कजालो, जो जहाँ पर है।

खाप बालाण को, देश को, कलश्यियाण को, चौगामे को व तिरसे को और छपरोली खाप बाराह और वगैर पंचायत करके फिरंगी को निकालो और यह कलंक हटा दो।

एक चिट्ठी एक गाँव न रहकर गाँव-गाँव फेर दो। आपका धर्म होगा। चिट्ठी पक्के आदमियों को दे देना और सब खाप में फेर देना। यह एक प्रकार का धर्म का चक्कर है। उस धमाना? सब भाईयों का फर्ज है। आप बाला जी पेशवा नाना के भाई शुक्रताल आवेंगे वहाँ पर जाकर उनकी बात सुनना। देश के हित को पूरा करना।

लेखक

देवीप्रसाद बनिया

सम्वत् विक्रमी १९१३ सावन बदी दोज
की चिट्ठी का उत्तर

२. ओम् श्री गणेशाय नमो नम:

सब खापों के पंचों और कौमों के (लोगों) को हमारी राम-राम पहुँचे। आगे भाइयो! भारतवर्ष मुल्क हिन्दुस्तान के सब लोगों ने यह तय किया है कि ३० मई सं. १८५७ ई. विक्रमी सम्वत् १९१४ वैशाख जेठ में सारा देश फिरंगी को भारत से बाहर करने लड़ाई लड़ेगा। आप अपनी-अपनी खाप वार सगन करके युद्ध में साझीदार बनो। जो इसमें सजा? नहीं लेगा, वो पापी है। आपको अपने बादशाह और नानाजी की बात माननी जरूरी है। यह चिट्ठी किसी को न देना गलत आदमी को (उस असल चिट्ठी की नकल है।)

सब पंचों का खादिम

चौधरी मेहरसिंह शामली

१९१३ माह की बदी ८ बकल्म खुद

३. श्री गणेशाय नमो नम:

खाप बालाण के सब पंचो! राम-राम पहुँचे। हम मथुरा न्हावण गये थे। वहाँ पर नाना साहब मरहठे हमें मिले थे। उस तीर्थ पर एक गुप्त पंचायत में यह बता बताई गई है कि भारत देश की सब जगत बिरादरीन मिल के साथ, फिरंगी के राज का नाश करे। सबके मेल से देश को सुख मिलेगा और फिरंगी का राज हट जावेगा। नाना/बादशाह देश के राजा होंगे।

शाहामल
गाँव. बिजरोल
सं. १९१३ फागुन बदी तीज

४. श्री गणेशाय नमो नम:

हमने एक पंचायत में यह तय किया है कि देश के बड़ों का साथ दो। मेरे यारों दोस्तों के नाम। चौधरी मेहरसिंह शामली। नवाब खैराती खाँ पडासाली। काजी महबूब अली थाना भवन। नवाब दादेन खाँ अलीगढ़। और सब खापों के चौधरी, सब जात-बिरादरियों के। देवी शाह लाला। देश खाप, बालान खाप, गढवाला खाप। भोवार हेड़ी के छज्जूमल लाल और सूबेदार जाट। खाप बालाण के चौधरी हेमचन्द व शुजामल मियाँ व घासीराम व श्योसिंह व पिवकस सौरम। थानसिंह सिसौली व श्योसिंह ढिकौली व नानू गुर्जर।

इस्सेपुर के टिल्ले पर नाना के भाई बालाजी मरहठे और अजीमुल्ला ने पंचायत करके राज के उलटने का गदर ३० मई को स. ५७, सम्वत् १९१४, सारा काम होगा।

५. श्री गणपति

खाप बालाण के पंचों की राम-राम बचना। आगे हमारी और आप भाइयों (की) बात हुई है। फिरंगी के राज का नाश मिलके करो।

चौधरी थानसिंह
सिसौली

६. गणेशाय नम:

मैं मथुरा न्वाहण गया था। नाना जी महरठा हमें मिला था। उसने हमें कहा था कि देश की सब जात मिलकर फिरंगी को मारो। हम पता देंगे और भगवान हमारा साथ देगा।

सम्वत् १९१४
सोरम हेमचन्द, सूरजमल, घासीराम, श्योसिंह
- प्राचीन भारतीय इतिहास शोध परिषद्, नयागाँव, झज्जर, हरियाणा

चॉकलेट खा रहे हैं या बछड़ों का मांस?

चॉकलेट का नाम सुनते ही बच्चों में गुदगुदी न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। बच्चों को खुश करने का एक प्रचलित साधन है चॉकलेट। बच्चों में ही नहीं वरन् किशोरों तथा युवा वर्ग में भी चॉकलेट ने अपना विशेष स्थान बना रखा है।

'गुजरात समाचार' में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार 'नेस्ले यू.के. लिमिटेड' द्वारा निर्मित 'किटकेट' नामक चॉकलेट में कोमल बछड़ों के रेनेट (मांस) का उपयोग किया जाता है। किटकेट बच्चों में खूब लोकप्रिय है। अधिकतर शाकाहारी परिवारों में भी इसको बड़े चाव से खाया जाता है। नेस्ले यू.के. लिमिटेड की न्यूट्रिशन ऑफिसर श्रीमती बाल एंडर्सन ने अपने एक पत्र में बताया कि किटकेट के निर्माण में कोमल बछड़ों के रेनेट का उपयोग किया जाता है। फलत: किटकेट शाकाहारियों के खाने योग्य नहीं है। इस पत्र को अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका 'यंग जैन्स' में प्रकाशित किया गया था। टेलीविजन पर अपने उत्पादों को शुद्ध दूध से बनते हुए दिखाने वाली नेस्ले लिमिटेड के इस उत्पाद में दूध तो नहीं, परन्तु दूध पीने वाले अनेक कोमल बछड़ों के मांस की कुछ मात्रा अवश्य होती है। हमारे धन को अपने देशों में ले जाने वाली ऐसी अनेक विदेशी कम्पनियाँ व्यापार तथा उदारीकरण की आड़ में भारतवासियों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रही हैं।

सन् १८५७ में अंग्रेजों ने कारतूसों में गाय की चर्बी का प्रयोग करके भारतीय संस्कृति को नष्ट करने की साजिश की थी। परन्तु भारतीय सैनिकों ने उसे विफल कर दिया था। अब वैसे वीरों की जरूरत है। भारतीय संस्कृति की सेवा में सब को साहसी बनना चाहिए। ऐसे हानिकारक उत्पादों के उपयोग को बन्द करके ही हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं। इसलिए ऐसी कम्पनियों के उत्पादों के बहिष्कार का संकल्प लेकर भारतीय संस्कृति की रक्षा में हमें आगे आना चाहिए।

मनुष्यों को चाहिये कि जिन यज्ञ करने वाले यजमान की पत्नी और यजमान से तथा जिस यज्ञ से दृढ़ विद्या और सुखों को पाकर दु:खों को छोड़ें उनका सत्कार तथा उस यज्ञ का अनुष्ठान सदा ही करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२८

क्या आप तैयार हैं?

- रामनिवास गुणग्राहक

महर्षि देव दयानन्द जी महाराज के सामने उनके शुभ चिन्तकों ने जब किसी ऐसी संस्था के गठन की बात कही जो उनके बाद भी ऋषि के कार्यों को भविष्य में चला सके तो ऋषिवर ने एक सहज आशंका प्रकट करते हुए कहा था कि संस्था का गठन तो कोई कठिन काम नहीं है, लेकिन कहीं ऐसा न हो कि आगे चलकर वह भी एक सम्प्रदाय बनकर रह जाए। इस आशंका की अनदेखी करते हुए भी महर्षि ने हितैषी-सहयोगियों के विशेष आग्रह के चलते कई सुनहरी सम्भावनाएँ संजोये 'आर्यसमाज' नामक जिस संगठन को अपना पूर्ण तप-त्याग और बलिदान देकर खड़ा किया, आज वह संगठन सम्भावनाओं की अपेक्षा आशंकाओं के निकट खड़ा दिखता है। आर्यसमाज की पहली पीढ़ी के आर्यों ने अपना जीवन लगाकर आर्यसमाज की जीवन-ज्योति को भारत की सीमाओं के बाहर एशिया से आगे निकलकर यूरोप के सुदूर क्षेत्रों में बड़ी चमकदार आभा के साथ विश्व पटल पर फैलाया। किसी को बुरा न लगे तो आज का सच यह है कि ऋषि के तप-त्याग और पहली पीढ़ी के प्रबल पुरुषार्थ को एक पग आगे बढ़ाने के स्थान पर हम उनके पुण्य प्रताप का बिना अपराध बोध के दोहन मात्र कर रहे हैं। बुरा लगेगा ही यदि इससे जुड़े एक और सच को प्रकट किया जाए, वह सच यह है कि पूर्वजों के पुण्य प्रताप का आज हम जो दोहन कर रहे हैं, वह दोहन भी लोकोपकार के लिए न होकर निहित स्वार्थ पूर्ति के लिए ही किया जा रहा है। जब कानों को सच सुनने में सुखद न लगे तो विवेकशील व्यक्ति को अपने व्यवहार की जाँच-पड़ताल प्रारम्भ करके विचारों में परिवर्तन लाने के लिए सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय और सज्जनों की संगति में मन लगाना चाहिए। मनोविज्ञान का सिद्धान्त है कि जो चीज अपने पास नहीं होती या जिस वस्तु-व्यक्ति के प्रति हमारे हृदय में लगाव, अनुराग नहीं होता उसकी प्रशंसा या वृद्धि हमारे हृदय में भय व द्वेष का संचार करती है। सत्य-शून्य व्यक्ति सदैव सत्य से दूर भागने में लाभ देखता है। वह नहीं जानता कि सत्य से दूर भागना या मुँह छिपाना बहुत थोड़े समय का मन-बहलाव है। सत्य एक पल के लिए धरती के किसी कोने में वा जीवन के किसी क्षेत्र में भी मानव का पीछा नहीं छोड़ता। आप बाहरी सत्य का सामना करने से जितना बचना चाहोगे तो आपके अन्तर्हृदय में विद्यमान सत्य उतनी ही प्रबलता से आपको कचोटता रहेगा। सत्य से भयातुर मानव ने अन्दर के सत्य से बचने के उपाय के रूप में मादक पदार्थों का सेवन प्रारम्भ कर दिया, लेकिन विचारणीय बात तो यह है कि नशा कब तक हमारी चेतना को चुप कराता रहेगा? नशा सच का विकल्प नहीं हो सकता, हमारी चेतना, हमारी सत्यशीलता सत्य से ही सन्तुष्ट होती है। सच हमारा जीवन है, जीवन का आधार है।

हम परमात्मा को दयालु कहते हैं, हमारे जीवन-यापन के लिए विशाल ब्रह्माण्ड और विस्तृत वसुन्धरा की सुखद संरचना-संचालन से लेकर वेद ज्ञान देना उसकी दया, कृपा करुणा का अनन्त विस्तार हमारे सामने बिखरा पड़ा है। मानवीय व्यवस्था किसी मानव को भोग्य वस्तुओं से वंचित कर दे तो यह उसका पाप है अन्यथा परमात्मा की बनाई इस सृष्टि में खान-पान आदि आवश्यक सामग्री का कभी, किसी काल में अभाव रहा हो, ऐसा इतिहास नहीं मिलता। आज जब विश्व-जनसंख्या की वृद्धि अपने चरम पर है और उस जनसंख्या का लगभग आधा भाग छोटी-बड़ी खाद्य समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे में विशेषज्ञों का मानना है कि वितरण सम्बन्धी अव्यवस्थाओं और धनी वर्ग द्वारा खाद्य पदार्थों के दुरुपयोग से बचा जा सके तो धरती का एक भी प्राणी भूखे पेट न सोये। परमात्मा की दी हुई अक्षय जीवन-सामग्री को हमारा धनी वर्ग या तो अधिक लाभ के लालच में पड़कर गोदामों में सड़ा रहा है या जितना खाता है उससे अधिक खराब करके अभाव उत्पन्न कर रहा है। मेरे ध्यान में आता है कि किसी विशेष ने एक लेख में उल्लेख किया था कि विश्व की कुल जनसंख्या लगभग साढ़े छः अरब है और हमारे पास खाद्य सामग्री का भण्डार इतना है कि ग्यारह अरब व्यक्तियों की उदर पूर्ति सरलता से हो सकती है। स्पष्ट है कि परमात्मा ने इस धरती को हमारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ बनाया है। यह उस जगदीश्वर की अपार कृपा करुणा की ही एक झलक है। इससे आगे बढ़कर देखें तो परमात्मा ने इस संसार को विश्वभर रूप देकर हमें यह भी बता दिया था कि इस संसार में हम अपना जीवन-यापन किस रीति-नीति से करें, संसार में कैसे जियें? इसके लिए परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में चार ऋषियों के माध्यम से हमें जीवन जीने का सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान प्रदान कर दिया है। सौ टके की बात यह है कि यदि परमात्मा अपना वह ज्ञान ऋषियों के माध्यम से हमें न देता तो अनन्त काल तक मनुष्य अविद्या-अज्ञान के अन्धकार में भटकता रहता और उसकी

स्थिति आज तक भी पशु-पक्षियों से कहीं अधिक दयनीय होती। कारण कि ज्ञान दो प्रकार का होता है- स्वाभाविक और नैमित्तिक। स्वाभाविक उसे कहते हैं जिसके सीखने की आवश्यकता नहीं होती, जो हमारे स्वभाव का ही अंग होता है। पशु-पक्षियों में वही स्वाभाविक ज्ञान है, इसलिए बैया का बच्चा बिना किसी के सिखाये बहुत अच्छा एवं जटिल घौंसला बना पाता है। रेगिस्तान में कई पीढ़ियों से रहने वाली गाय का एक-दो माह का बछड़ा तालाब को तैर कर पार कर जाएगा, लेकिन २०-२५ वर्ष का बलिष्ठ नवयुवक अगर तैरना सीखेगा नहीं तो डूबे बिना रह नहीं सकता। किसी भी पशु-पक्षी, कीट-पतंग को जीवनभर किसी से कुछ नहीं सीखना, उनके पास स्वाभाविक ज्ञान है। मनुष्य के पास जितना भी ज्ञान-विज्ञान है वह स्वाभाविक न होकर नैमित्तिक है, किसी बाहरी निमित्त से है। संसार में हम माता-पिता व गुरुजनों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। ईश्वर को मानने न मानने वाले सभी ईश्वर के इस नियम का पालन करते हुए अपने बच्चों को घर पर भी सिखाते हैं और विद्यालय भी भेजते हैं। उनका यह व्यवहार प्रमाणित करता है कि धरती तल का हर नास्तिक बहुत अंशों में पक्का आस्तिक होता है। हम जिस गुरु के पास बालक को भेज रहे हैं उसने भी किसी गुरु से ज्ञान लिया होगा, उस गुरु का भी कोई गुरु होगा। ऐसा विचार करते हुए अन्त में हम उस परम गुरु परमात्मा पर जाकर ही ठहरते हैं, इसीलिए हमारे ऋषि कहते हैं- **'स पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्'** - अर्थात् वह ईश्वर ही मूल रूप से हमारा और पूर्व के गुरुओं का गुरु है।

हमने यह भली-भाँति जान लिया कि उस दयालु देव ने अपनी कृपा और करुणा बरसाते हुए हमें भोग्य सामग्री से भरपूर यह वसुन्धरा दी, इस वसुन्धरा से आवश्यक भोग प्राप्त करते हुए जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचा देने वाला ज्ञान वेद दिया। मुझे लगता है कि परमात्मा ने अपनी दया, कृपा व करुणा की जब वर्षा की तो अपने अमृत पुत्र मानव के लिए सर्वसुलभता के साथ-साथ सरलता और सहजता का वरदान भी दिया। जैसे परमात्मा ने भोग्य-सामग्री के रूप में संसार के ये सब पदार्थ दिए तो इन्हें भोगने के लिए शरीर और भोगने की स्वाभाविक इच्छा भी हमारे अन्दर उत्पन्न कर दी। संसार की हर योनि के सब जीव-जन्तु अपनी-अपनी भोग्य सामग्री के प्रति स्वाभाविक लगाव रखते हैं, जीवन भी सबको प्रिय है। मनुष्य में भी भोगने और जीवन जीने की स्वाभाविक इच्छा स्पष्ट रूप से देखी जाती है। यहाँ तक तो सब कुछ ठीक है लेकिन मानव के ऊपर परमात्मा की सर्वोपरि कृपा और है और मानव अपनी उस विशेष उपलब्धि से पूर्णतः अनजान दिखता है। वह नहीं जानता कि प्रभु की सर्वोपरि, सर्वाधिक कल्याणकारी कृपा उसके लिए क्या है? वैसे ऐसा भी नहीं कि मनुष्य प्रभु की इस कृपा के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता हो। जीवन के हर क्षेत्र में वह उस महेश्वरीय कृपा का जाने-अनजाने में लाभ उठाता भी है, लेकिन उसकी स्पष्ट जानकारी होने पर वह जहाँ प्रभु के प्रति अधिक कृतज्ञ होगा वहीं तनिक सावधानी और ज्ञानपूर्वक उसका लाभ उठायेगा तो जीवन के उच्चतम सोपान उसके सुखद आसन बनने को आतुर हो उठेंगे। संसार की हर वस्तु सुखद, शान्तिप्रद एवं कल्याण साधक बन जाएगी। मानव मात्र उसके लिए अपनत्त्व से भर उठेगा, सब उसके लिए अपने हो जायेंगे और वह सबका प्रिय पात्र बन जाएगा।

अब आपके हृदय में जिज्ञासा उठ रही होगी कि ऐसी ईश्वर ने हमारे ऊपर कौन सी दया की नदियाँ बहा रखी है कि जिसमें नहाकर हमारा सब कुछ सुखद हो जाने वाला है? उसे जानने से कहीं अधिक आवश्यकता मानने की है, जीवन में स्वीकार करने की है। सच में वह परमेश्वर की सर्वाधिक कल्याणकारी कृपा है। मानव सब कुछ पाकर भी केवल उसके बिना सर्वाधिक दीन-हीन होकर रह गया है। तनिक सुनिये- समझिये कि आखिर ऐसी कौनसी कृपा है, वेद के शब्दों में-

ओ३म् दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामऽनृते दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

प्रभु की उस महती कृपा के दर्शन कराता हुआ यह मन्त्र हमें बता रहा है कि सत्य और असत्य के सम्बन्ध में उस प्रजापति परमात्मा ने हमारे हृदय में बड़ी सुन्दर और सुखद व्यवस्था की हुई है। वह व्यवस्था यह है कि उस प्रभु ने हमारे हृदय में सत्य के प्रति श्रद्धा और असत्य के प्रति अश्रद्धा स्वाभाविक रूप से दे रखी है। विचारशील व्यक्ति के लिए यह जानना कि हमारे हृदय में सत्य के प्रति स्वाभाविक श्रद्धा और असत्य के प्रति स्वाभाविक अश्रद्धा है- अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। जैसे हमारी इन्द्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति विषयों की ओर है, जैसे एक नदी स्वाभाविक रूप से ऊपर से नीचे की ओर बहती है, जैसे आग की लपटें स्वाभाविक रूप से ऊपर की ओर उठती है, ठीक वैसे ही हर मानव के हृदय में सत्य के प्रति श्रद्धा के भाव और असत्य के प्रति अश्रद्धा के भाव उत्पन्न होते ही हैं। स्वभाव का अर्थ होता है किसी वस्तु का मूल गुण। जैसे गुड़ मीठा होता है, मिर्च कड़वी होती है तो हम कहेंगे कि मीठापन गुड़ का स्वाभाविक गुण

है और कड़वापन मिर्च का। प्रिय पाठको! क्या आपके हृदय में यह जानकर कोई हलचल नहीं होगी कि ठीक इसी प्रकार से सत्य के प्रति श्रद्धा और असत्य के प्रति अश्रद्धा भी हमारे हृदय का स्वाभाविक गुण है? क्या इसे प्रभु की छोटी कृपा कहेंगे कि समग्र संसाधनों से भरा-पूरा यह संसार देकर, जीवन भर (जीवन के हर क्षेत्र में) काम आ सकने वाला सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान भी उस परमात्मा ने हमें दे दिया। इस सबसे अधिक कृपा और करुणा के रूप में उस प्रभु ने अपने अमृत पुत्र मानव को जब इस धराधाम पर उतारा तो उसे सत्यशील हृदय देकर मानो यह सुनिश्चित ही कर दिया हो कि वेद में प्रदान की गई समस्त सत्य विद्याओं को हृदयंगम करके यह मानव शीघ्र ही बड़ी सरलता और सहजता से अपना कल्याण सिद्ध कर लेगा?

हे मनुष्य! तू दिन-रात अपने विषयों की ओर दौड़ती इन्द्रियों के पीछे फिसलता, घिसटता रहता है। मन-पलंग पर सवार होकर संकल्प-विकल्पों के संसार की सैर करता रहता है। रोता रहता है कि मन नहीं रुकता, इन्द्रियाँ नहीं रुकती। इन्हें कैसे रोकूँ विषयों की ओर दौड़ना तो इनका स्वभाव है, किसी के स्वभाव पर रोक लगाना महाकठिन कार्य है। भोले! क्या तू नहीं जानता कि सत्य के प्रति श्रद्धा तेरे हृदय का स्वभाव है? क्या तूने अपने हृदय को कभी स्वाभाविक रूप से काम करने दिया? क्या सच के लिए हृदय के कपाट बिना किसी दुराग्रह व पूर्वाग्रह के तूने कभी खोले? अब तू बता तेरा भला हो भी तो कैसे हो? जब तू पल-पल अपने हृदय का गला घोंटता रहता है, उसे उसके स्वभाव के विरुद्ध असत्य के कूड़े-कबाड़ से ठूँस-ठूँस कर भरे रखता है तो सुख-शान्ति व कल्याण किस रास्ते तेरे हृदय में प्रवेश करें? अपनी मूर्खता के हाथों अपने सत्यशील हृदय का युगों-युगों से निरन्तर गला घोंटने वाला सुख व कल्याण की आशा करे तो....। ऐसी बात नहीं कि मानव इस बात से एकदम अनजान हो, वह जानता है कि मेरे हृदय ने बहुत बार सत्य के प्रति अपना लगाव बड़ी प्रबलता से प्रकट किया है। किसी दु:खी, पीड़ित और संकटग्रस्त को देखकर मेरे हृदय में उसकी सहायता के लिए वैसे ही भाव प्रकट हुए हैं जैसे कि स्वयं संकट ग्रस्त होने पर मैं दूसरों से अपने लिए चाहता हूँ। मेरा हृदय कई बार मेरे बुने हुए स्वार्थ साधक जाल से मुक्त होकर सत्य धर्म से प्रभावित हुआ है, कई बार हुआ है, ऐसी बहुत सी यादें आज भी मेरे मनोमस्तिष्क में ताजा होने के लिए सिर उठा रही हैं। हाँ मैं स्वयं साक्षी हूँ कि मैंने बहुत बार हृदय को सत्य के स्वाद से वंचित किया है। यह मेरे अन्दर की बात है, मुझसे अधिक भली प्रकार इसे और कौन जान सकता है? मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने अपने हृदय को सत्य की सुखद-सहज सरिता में बहने से बलपूर्वक रोका है।

हे मानव! क्या तुझे लगता है कि तू इसी रास्ते पर चलते हुए सुख-शान्ति पा लेगा? क्या तेरी बौद्धिक प्रतिभा इसे स्वीकार करती है कि सत्य के बिना कल्याण सम्भव है? यदि नहीं स्वीकारती तो हृदय पर हाथ रखकर उत्तर दे कि हृदय को सत्यशील बनाये रखने के लिए तू अपने व्यवहार में क्या-क्या बदलाव ला सकता है? हमारे ऋषि-महर्षि मनन-विचार करने वाले को ही मनुष्य कहते हैं। **'यो मननात् स मनुष्यः'** के अनुसार मननशील ही मनुष्य है। जो मनन, विचार किये बिना ही कार्य करते हुए जीवन बिता देता है, वह मनुष्य नहीं कहलाता। मनुष्यपन का लक्षण है कि हम जो भी कार्य करें, उसे धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, पाप-पुण्य, उचित-अनुचित की कसौटी पर परख कर न्याय रीति से विचार कर ही करें। विचारशील व्यक्ति प्रथम तो सत्य से भटकता ही नहीं, यदि भटकता भी है तो बहुत जल्दी सम्भल जाता है। हे मननशील मानव! यदि तुझे परमात्मा के बनाये हुए संसार की हर वस्तु से सुख प्राप्त करना है, यदि तुझे प्रभु से प्राप्त वेद ज्ञान का पूरा लाभ उठाना है तो तुझे अपने हृदय की सत्यशीलता का सम्मान करना होगा। प्रभु की सर्वोपरि कृपा और करुणा के रूप में प्राप्त सत्य के प्रति हृदय की स्वाभाविक श्रद्धा को जीवित करना होगा। इसके लिए हमें कोई अधिक भाग-दौड़ करने या पसीना बहाने की आवश्यकता नहीं है। बस हम अपने हृदय और मस्तिष्क में जड़ जमा चुकी स्वार्थ की प्रवृत्ति से ऊपर उठकर उस सत्यशीलता को बसा लें, जिसे परमात्मा ने हमारे कल्याण के लिए हमारे हृदय के साथ स्वाभाविक रूप से गूँथ दिया है। यह कोई कठिन काम नहीं है, स्वार्थ और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर एक बार भी जिसने सत्यशीलता का सहज आनन्द चख लिया, वह संसार के सब बन्धनों से छूट कर प्रभु के परमानन्द का पात्र बन जाता है। इतना सब कुछ समझने-समझाने के बाद सौ टके का प्रश्न यही है- **क्या आप तैयार हैं?**

- स्मृति भवन, जोधपुर, राजस्थान

जैसे प्राणियों के लिये सूर्य्य की किरण उस को प्रकाशित करती है वैसे मनुष्य की अनेक विद्यायुक्त बुद्धियाँ ईश्वर का प्रकाश करा देती है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४१

राम सोमरस पीते थे सुरा (शराब) नहीं

- सुरेश चन्द्र त्यागी

द्रविड़ मुनेत्र कड़घम (डी.एम.के.)के नेता माननीय एम. करुणानिधि का ऐसा मानना है कि वाल्मीकि रामायण पढ़ने से ऐसा मालूम पड़ता है कि राम शराब पीते थे। इसी प्रकार उनकी पार्टी के नेता टी.आर.बालू का मानना है कि रामेश्वर से श्रीलंका को जोड़ता पुल ऐडम्स ब्रिज है, रामसेतु नहीं है। क्या ऐसी बातें मानने योग्य हैं।

भारतीय संविधान की मूल प्रति में राम, कृष्ण और नटराज के चित्र हैं। ऐसे २२ चित्रों में वेद-कालीन गुरुकुल, आश्रम, भगीरथ की तपस्या, गंगावतरण, राम की लंका विजय, महाभारत युद्ध से पूर्व कृष्ण का अर्जुन को दिया गीता का उपदेश, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, महारानी लक्ष्मीबाई, नागाधिराज हिमालय, विशाल हिन्द महासागर आदि के चित्र आलेखित हैं। भारतीय संस्कृति के द्योतक संविधान की मूल प्रति में चित्रित उपरोक्त महापुरुषों के सामने किसी ने विरोध प्रदर्शित नहीं किया था। अत: भारतीय संस्कृति के सत्य को तोड़ना-मरोड़ना या उसकी उपेक्षा हमारे राष्ट्र के लिये आत्मघाती सिद्ध होगी। रसमयांतेर यह समझना मुश्किल हो जायेगा कि भारत का भव्य भूतकाल कैसा था? वर्तमान के ऊपर उसका क्या प्रभाव है और भविष्य में उसका कैसा प्रभाव होगा। जो लोग अपने पूर्वजों को सम्मान नहीं देते, उनका पतन निश्चित है। क्योंकि पूर्वजनों के गौरवपूर्ण इतिहास और उनके उपदेशों से मानवों को उनके वर्तमान और भावी जीवन में प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलता है। उपरोक्त डी.एम.के. (द्रमुक) नेताओं ने रामायण का अध्ययन करते समय भारतीय दृष्टिकोण न अपनाकर अंग्रेजी दृष्टिकोण अपनाया है।

इसमें संदेह नहीं कि विदेशी विद्वानों ने संस्कृत साहित्य में विशेषत: वैदिक वाङ्मय में अनुकरणीय प्रयास किया है, परन्तु जातीय पक्षपात, राजनैतिक स्वार्थ तथा शास्त्र विषय में उनकी भ्रान्तियों के कारण वे वैदिक साहित्य और इतिहास को यथार्थ रूप में प्रस्तुत न कर सके। इसलिए पाश्चात्य विद्वानों और डॉक्टर कीथ के वैदिक इन्डेक्स के आधार पर उनसे प्रभावित कुछ भारतीय विद्वानों ने वैदिक साहित्य का गलत भाष्य किया।

वाल्का भील में से बने महर्षि वाल्मीकि ने देवर्षि नारद से पूछा कि इस समय सामाजिक मर्यादाओं का पालन करने वाला और उत्तम चरित्र का महामानव कौन है, जिसका मैं महाकाव्य लिखूँ? इस पर देवर्षि नारद ने सुझाव दिया कि इस समय श्रीराम ही ऐसे महामानव हैं, जिनके जीवन से सम्बन्धित महाकाव्य तुम्हें लिखना चाहिये। महर्षि वाल्मीकि राम के समकालीन थे। इसलिए राम के जीवन में जो-जो घटनाएँ घटी, उन्हीं घटनाओं को उन्होंने अपनी रामकथा में वर्णित किया है। वाल्मीकि ऋषि ने रामायण में भारत और उसके बाहर जिन-जिन स्थानों का वर्णन किया है, वे आज भी मौजूद हैं।

उपरोक्त वार्तालाप से भी यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि रामायण एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है। विश्व के प्राचीनतम साहित्य वेद में सोमरस का उल्लेख मिलता है। सोमपान सम्बन्धी उल्लेखों तथा विभिन्न प्रक्रियाओं के वर्णन से ऐसी जानकारी मिलती है कि सोम वह जड़ी-बूटी है जिसका रस पीने वाला नशे में झूम उठता है, परन्तु सोम यह 'सुरा' (शराब) नहीं है। ऋग्वेद में उसे लताओं का पति कहा है। पन्द्रह दिन तक उसमें एक-एक पत्ता बढ़ना है और पन्द्रह दिन तक एक-एक पत्ता घटता है। यह इसकी पहचान है।

शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में कहा है कि सोम अमृत है तो सुरा विष है। सोमरस पीने से किसी भी प्रकार का उन्माद पैदा नहीं होता। यह तृष्णा को शान्त करता है। ज्ञान-विज्ञान युक्त शुभ प्रवृत्तियों में वृद्धि करता है और मनुष्य को शक्तिशाली बनाता है। इससे किसी भी प्रकार की कमजोरी नहीं आती। सोमरस के उपरोक्त गुणों के कारण ही ऋग्वेद और दूसरे वेदों में सोमरस के गुणगान सम्बन्धी अनेक मन्त्र मिलते हैं। श्रीराम सोमरस का पान इसलिए करते थे, जिससे वे शक्तिशाली होकर युद्ध में राक्षसों को पराजित कर सकें। इसका ऐसा अर्थ करना उचित नहीं है कि राम मद्यपान करते (शराब पीते) थे। यदि करुणानिधि सोम और सुरा में भेद जानते तो ऐसा नहीं कहते कि राम सुरा (शराब) पीते थे।

रावण पुलत्स्य ऋषि का पौत्र और विश्रवा ऋषि का पुत्र था। रावण यक्ष जाति का और आर्य संस्कृति में दीक्षित ब्राह्मण था। वह वेदों का प्रकाण्ड पण्डित था। इस बात को सब जानते हैं कि द्रविड आन्दोलन ब्राह्मण विरोधी था, तो यह बात समझ में नहीं आती कि उत्तर भारत में ब्राह्मण कुल में जन्मा रावण द्रविड़ कैसे बन गया। अत: आर्य और द्रविड गुणवाचक शब्द हैं। अंग्रेजों ने इन्हें जातिवाचक बनाया। करुणानिधि की पार्टी के नेता बालू का ऐसा मानना है कि समुद्र के जल में डूबा हुआ पुल ऐडम्स ब्रिज है रामसेतु नहीं है। यदि उन्हें काल गणना की जानकारी होती तो इस प्रकार नहीं कहते और भारतीय वैदिक ज्ञान की

सर्वोपरिता को स्वीकार करते।

ईसाई और इस्लामी परम्परा में प्रथम ईश्वर निर्मित मानव को ऐडम (Adam) कहते हैं। इस्लामी परिभाषा में उसे आदम कहते हैं और संस्कृत में आदिम यानि सर्वप्रथम कहते हैं। वर्तमान सृष्टि के सर्वप्रथम मानव वैवस्वत् सप्तम मनु हैं। प्रत्येक मन्वन्तर के शासक को मनु कहते हैं। वर्तमान सातवें वैवस्वत मन्वन्तर का भाग है। और वैवस्वत् मन्वन्तर में २७ चतुर्युगी बीत गई हैं। एक चतुर्युगी में ४३,२०,००० वर्ष होते हैं। और अठ्ठाइसवीं चतुर्युगी के सतयुग (१७,२८,०००), त्रेतायुग (१२,९६,०००) द्वापर युग (८,६४,०००)और कलियुग (५१०८) के बीते हुए वर्ष जोड़ देने से (११,६६,४०,०००+३८,९३,१०८)= १२,०५,३३,१०८ मानव वर्ष। अत: वर्तमान मानव सृष्टि के प्रथम मानव (ऐडम) को बारह करोड़, पांच लाख, तेन्तीस हजार, एक सौ आठ वर्ष हुए हैं। और अमरीका की नासा संस्था द्वारा समुद्र में डूबे हुए पुल की उम्र १७ लाख ५० हजार वर्ष है। इसलिए इस पुल को ऐडम्स ब्रिज नाम नहीं दिया जा सकता। अत: हट, दुराग्रह छोड़कर यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि पानी में डूबा हुआ पुल रामसेतु है।

हलफनामा में कहा गया था कि रामसेतु की धारणा बेबुनियाद है। इसका कोई वैज्ञानिक सबूत नहीं है कि साढ़े छह हजार वर्ष पूर्व राम ने यह पुल बनवाया था। ऐसा लगता है कि हलफनामा दायर करने वालों ने इस बात पर विचार नहीं किया कि यह पुल कब और कैसे समुद्र में डूबा। प्राप्त ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार भारत और श्रीलंका के बीच में आये रामसेतु का उपयोग आवागमन के लिए होता रहा है। वैज्ञानिक ऐसा मानते हैं कि महाद्वीप स्थानान्तर करते हैं। जब अफ्रीका महाद्वीप खिसकता-खिसकता भारत के समीप आ गया तो इससे समुद्र के पानी का जलस्तर बढ़ा और उससे रामसेतु पानी में डूब गया। महाद्वीप खिसकने की घटना लाखों वर्ष पहले होने से यह बात सिद्ध हो जाती है कि रामसेतु का निर्माण हजारों नहीं लाखों वर्ष पहले हुआ था। वैज्ञानिकों ने इस पहलू पर विचार ही नहीं किया।

यदि रामेश्वर से श्रीलंका के बीच का भौगोलिक निर्माण उस समय से है, जब पृथ्वी सात भागों में विभाजित हुई थी तो ये प्राकृतिक चट्टानें तो अनादिकाल से श्रीलंका को मुख्य भारत भूमि से जोड़ रही हैं। और यदि इन चट्टानों को जोडने के लिये राम के समय में तैरते हुए पत्थरों का उपयोग कर वैदिक निर्माण तकनीक के आधार पर रामसेतु का निर्माण हुआ है तो जैविक सृष्टि को संरक्षण प्रदान करने वाले और पश्चिमी समुद्र तट के प्रदेशों में रहने वाले लोगों को सुनामी से बचाने वाले इस निर्माण को राष्ट्रीय धरोहर घोषित करना चाहिए।

गुजरात वैभव से साभार

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (द्वितीय स्तर)

दिनांक १५ से २२ जून २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आंकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे। इस दिशा में अब तक दो शिविरों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर सफल प्रयास किया गया है। **इस द्वितीय स्तर के शिविर में वे ही भाग ले सकेंगे, जिन्होंने प्राथमिक स्तर वाले शिविर में भाग लिया है।** इस शिविर में प्राथमिक स्तर वाले शिविर की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मता से विषयों का अनुभव करवाया जाएगा और वैसा ही सूक्ष्मता से, कठोरता से नियम व अनुशासन होगा।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. दिनचर्या के कुछ भाग में आकृति मौन भी अनिवार्य होगा।
३. प्रार्थी की न्यूनतम दसवीं के स्तर की योग्यता अनिवार्य है। इस हेतु प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि लाना आवश्यक है।
४. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
५. शारीरिक व मानसिक सात्विकता के लिए यथासम्भव भोजन की मात्रा निश्चित होगी।
६. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
७. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
८. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
९. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
१०. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
११. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
१२. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१३. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
१४. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ– मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व

शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १३ से २० अप्रैल, २०१४ **ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर,** सम्पर्क : ०९४१४००३७५६, समय : मध्याह्न १.३० से २.३० बजे।

२. १६ से २३ मई, २०१४ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

३. २४ से ३१ मई, २०१४ **संस्कृत सम्भाषण शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४७०९४९४

४. १ से ८ जून, २०१४ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

५. १५ से २२ जून, २०१४- **योग-साधना शिविर (द्वितीय स्तर),** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

विशेष- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित पूर्व दो ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविरों में प्रथम व उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त प्रशिक्षकों के लिए भी योग साधना शिविर (द्वितीय स्तर) में भाग लेने का अवसर रहेगा।

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

१३ से २० अप्रैल, २०१४, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर शुल्क १००० रु. है। १३ अप्रैल सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी। शिविर का समापन २० अप्रैल को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००३७५६, समय-मध्याह्न १.३० से २.३०।

विशेष- प्रतिभागी अपना आवेदन १५ मार्च २०१४ तक भेज देवें जिसमें कि नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता, अपना चित्र, दूरभाष संख्या स्पष्ट लिखा हो। स्वीकृति मिलने पर ३० मार्च तक अपना शुल्क अवश्य ही जमा करवाकर अपना पंजीयन करवा लेवें।

५० की सीमित संख्या में प्रथम पंजीयन करवाने वाले को ही शिविर में भाग लेने की अनुमति होगी।

पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१।ईमेल-psabhaa@gmail.com

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

वेदों की बातें

– रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

१. अरातिर्नो मा तारीत्।
(अथर्व. २.७.४)
कोई शत्रु हमें न दबा पाए।

२. अस्मद् युयवन्नमीवाः।
(ऋग्. ७.३८.७)
रोग हमसे दूर हों।

३. श्रद्धया सत्यमाप्यते।
(यजु. १९.३०)
श्रद्धा से सत्य मिलता है।

४. ईशावास्यमिदं सर्वम्।
(यजु. ४०.१)
यह सभी कुछ ईश्वर से व्याप्त है।

५. उत्क्रामातः पुरुष माव पत्थाः।
(अथर्व. ८.१.४)
हे पुरुष, तू यहाँ से ऊँचा उठ, नीचे मत गिर।

६. मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।
(यजु. ३६.१८)
हम एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

७. प्रत्यङ्ङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।
(यजु. ३२.४)
वह परमेश्वर सर्वतोमुख और सर्वत्र वर्तमान है।

८. आत्मा निभृष्टः। (अथर्व. १९.६०.२)
मेरी आत्मा कभी न गिरे।

१०. न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु।
(ऋग्. ७.३२.२१)
दुराचारी कभी धन नहीं पाता।

११. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
(यजु. ४०.२)
मनुष्य कर्म करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा करे।

१२. प्राणो ह सत्यवादिनमुत्तमे लोक आ दधत्।

प्राण सत्य बोलने वाले को श्रेष्ठ लोक में प्रतिष्ठित करता है।

१३. अनेजदेकम्।
(यजु. ४०.४)
परमेश्वर एक है और अचल है।

१४. ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम्।
(अथर्व. १८.४.२)
यज्ञ करने वाले स्वर्ग लोक को जाते हैं।

१५. मानो द्विक्षत कश्चन।
(अथर्व. १२.१.२४)
हममें से कोई भी द्वेष न करें।

१६. सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्।
(ऋग्. ९.७३.१)
सत्य की नौकाएँ सत्कर्मी को पार कर देती हैं।

१७. मिथोविघ्नाना उपयन्तु मृत्युम।
(अथर्व. ६.३२.३)
परस्पर लड़ने वाले मौत को पाते हैं।

१८. बोधश्च त्वा प्रतिबोधश्च रक्षताम्।
(अथर्व. ८.१.१३)
ज्ञान और विज्ञान तेरे रक्षक हों।

१९. एष इन्द्रो वरिवस्कृत्।
(ऋग्. ८.१६.६)
यह इन्द्र ही बल का दाता है।

२०. सं जानीध्वम् सं पृच्यध्वम्।
(अथर्व. ६.६४.१)
सहमत बनो और मिल जाओ।

२१. सुमतिमूर्जयन्तीमिषमश्याम।
(ऋग्. ५.४१.१८)
हम बुद्धिवर्धक और बलवर्धक अन्न को खाएँ।

२२. अपृणन् मर्डितारं न विन्दते।
(ऋग्. १०.११७.१)
जो स्वयं किसी का सहायक नहीं बनता। उसका भी कोई सहायक नहीं बनता।

२३. क्षत्रेणात्मानं परिधापयाथः।
(अथर्व. १२.३.५१)
क्षत्रियत्व से अपनी रक्षा कर।

२४. अकर्मा दस्युः।
(ऋग्. १०.२२.८)
कर्महीन दस्यु है।

२५. सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।
(अथर्व. १९.१५.६)
सभी (दिशाओं के प्राणी) मेरे मित्र बनें।

२६. सं जीवास्थ।
(अथर्व. १९.६९.३)
मिल कर जिओ।

२७. शुद्धाः पता भवत।

(ऋग्. १०.१८.२)
स्वच्छ और पवित्र बनो।

२८. यन्ति प्रमादमतन्द्राः।
(अथर्व. २०.१८.३)
उद्यमी को विशेष आनन्द मिलता है।

२९. तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
(यजु. १९.९)
हे परमेश्वर! तू तेजस्वी है। मुझे भी तेजस्वी बना।

३०. अयज्ञियो हतवर्चो भवति।
(अथर्व. १२.२.३७)
यज्ञहीन का तेज नष्ट हो जाता है।

३१. प्रेता जयता नरः।
(अथर्व. ३.१९.७)
लोगों आगे बढ़ो और विजय बनो।

३२. चारु वदानि पितरः संगतेषु।
(अथर्व. ७.१२.१)
मैं सभाओं में अच्छा बोलूँ।

३३. तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्त्रः।
(अथर्व. ९.१०.१९)
उस ब्रह्म से ही चारों दिशाएँ जीवन पाती हैं।

३४. सत्येनोत्तभिता भूमिः।
(ऋग्. १०.८५.१)
(सत्य) जिसका नाश नहीं होता। उस परमेश्वर ने भूमि को धारण किया है।

३५. मा वस्तेन ईशत माघशंसः।
(अथर्व. ४.२१.७)
तुम पर कोई चोर एवं घातक शासन न करे।

३६. पुष्ट्येयै गोपालम्।
(यजु. ३०.११)
पुष्टि के लिए गोपालक बनो।

३७. अन्यो अन्यमभिहर्यत।
(अथर्व. ३.३०.१)
परस्पर प्रेम करो।

३८. मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः।
(अथर्व. ८.१.९)
यहाँ पर उदास मन से मत रहो।

३९. अग्नी रक्षांसि सेधति।
(ऋग्. ७.१५.१०)
अग्नि बाधक जन्तुओं (कृमि) को नष्ट करती है।

४०. ब्रह्म क्षत्रं पवते।
(यजु. १९.५)
(ब्रह्म क्षत्र) ज्ञानवान ही (क्षत्र) बलवान को पवित्र करता है।

४१. दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते।
(ऋग्. १.१२५.६)
दानी अमर हो जाते हैं।

४२. हिरणमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
(यजु. ४०.१७)
सच्चाई का मुखड़ा सुनहरी ढ़क्कने से ढ़का हुआ है।

४३. सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
(ऋग्वेद. १०.१९१.२)
परस्पर मिलकर रहो। परस्पर संवाद किया करो। तुम्हारे मन एक दूसरे को समझा करें।

- सिहाल, कांगड़ा-१७६०५३ (हि.प्र.)

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल- psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

वीर सावरकर की प्रखर राष्ट्रभक्ति

- डॉ. कैलाश चन्द्र

वीर सावरकर भारत के राजनैतिक क्षितिज पर एक जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति उदित हुए। १२०० वर्षों के मुस्लिम आक्रान्ताओं के अमानुषिक अत्याचारों से अस्त-व्यस्त, १५० वर्षों के चालाक अंग्रेजों के शासन में अपनी आत्मा को भूलती हुई, हिन्दू जाति जब दिग्भ्रमित और उत्साहहीन हो रही थी, शत्रु से लोहा लेने की वैदिक युग से चल आ रही सहज वृत्ति को जैसे खो ही बैठी थी, भारत में अंग्रेजी राज की बरकतों की धुन अलापने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग में भेड़ों (काली भेड़ों) की वृद्धि हो रही थी, राष्ट्रवाद की जड़ें कमजोर हो रही थीं, विशुद्ध एवं प्रखर राष्ट्रवाद को समझते हुए भी भारत का हिन्दू नेतृत्व अंग्रेजों द्वारा बनायी गयी 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के खोखले राष्ट्रीय आन्दोलन में फँसा था, विदेशी विधर्मी मुठ्ठी भर अंग्रेजों को मार बाहर कर, भारतमाता को स्वाधीन कर भारत जैसे अति महान, अति प्राचीन राष्ट्र को एक अजेय शक्ति-सम्पन्न राष्ट्र के रूप में खड़ा करने का विचार भी जब शायद ही कोई करता हो, ऐसे विकट अवसर पर शस्य-श्यामला वीर-प्रसविनी भारतमाता ने एक ऐसे लाल को जन्म दिया जिसने १५ वर्ष की अल्प आयु में ही, जब देशभक्त चाफेकर बन्धुओं को फाँसी दी गयी, तो वीर सावरकर का खून खौल उठा और उन्होंने भारतमाता की स्वाधीनता के लिए प्राण-पण से संघर्ष करने का प्रण ले लिया। १९ वर्ष की आयु में ही नवयुवकों को मातृभूमि के लिए जीवन देने की प्रेरणा देने के लिए 'मित्र मेला' नामक संस्था चालू कर दी, जो आगे चलकर 'अभिनव भारत' के नाम की गुप्त संस्था बनी और भारत के अनेक प्रान्तों में क्रान्तिकारी वीरों को संगठित करने लगी। सावरकर जी की राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत कविताएँ तथा लेख महाराष्ट्र के युवकों में राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए प्राणों की बाजी लगाने के भाव का संचार करने लगे।

अंग्रेजी शासकों के कान खड़े हुए। नवयुवक सावरकर की ओर वे सन्देह और डर से देखने लगे। अवसर मिलते ही नवयुवक सावरकर अंग्रेजी साम्राज्य के गढ़ लन्दन में जा विराजमान हुए और 'अभिनव भारत' नामक क्रान्तिकारी संस्था का विस्तार इंग्लैण्ड ही नहीं, फ्रांस, जर्मनी, इटली और अमेरिका में बसे भारतीयों में किया जाने लगा। बड़े-बड़े मेधावी और साहसी युवक वीर सावरकर के अनुयायी बन कर क्रान्ति के मार्ग पर चलने लगे। लाला हरदयाल जी जैसे प्रखरबुद्धि, वी.सी. अय्यर जैसे विचारक, मैडम कामा जैसी वीरांगनाएँ और मदन लाल ढींगरा जैसे राष्ट्र की बलिवेदी पर न्यौछावर होने के लिए आतुर ऐसे सैंकड़ों देशभक्त सावरकर के नेतृत्व में 'अभिनव भारत' के काम में लग गये। '१८५७ का स्वातन्त्र्य समर' नामक प्रखर देशभक्ति की ज्वाला फैला देने वाली पुस्तक लिखकर तो सावरकर ने एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिखाया। अंग्रेज सरकार घबरायी। पुस्तक छपने से पहले ही जब्त कर ली गई और प्रबन्ध किये गये कि पुस्तक बाहर न आ सके। किन्तु सावरकर के अनुयायी पुस्तक की पाण्डुलिपि को भारत और फ्रांस भेजने में सफल हो गये। भारत में उस पुस्तक की पाण्डुलिपि को सर सिकन्दर हयात खान (जो आगे चलकर पंजाब के प्रधानमन्त्री पद पर रहे) लाए और प्रमुख क्रान्तिकारी सरदार भगतसिंह ने उसे गुप्त रूप से छपवा कर बाँटने का प्रयास किया। अमेरिका में गदर आन्दोलन के जनक लाला हरदयाल ने भी पुनः छपवा कर यूरोप भर में भेजी, और कितनी ही भाषाओं में भी उसके अनुवाद किये गये।

आगे चलकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के जवानों में भारत की आजादी के लिए प्राणों को न्यौछावर कर देने की भावना को जगाने के लिए वीर सावरकर जी की इसी पुस्तक के अंशों को छाप-छाप कर प्रचार करना चालू किया। उन्होंने '१८५७ के स्वातन्त्र्य समर' नामक इसी पुस्तक को तमिल भाषा में अनुवाद करवा कर तमिलभाषियों में तेजस्वी राष्ट्रभक्ति का मन्त्र फूँका।

लन्दन में वीर सावरकर से प्रेरित होकर मदनलाल ढींगरा ने सर कर्जन वायली को गोली से भून डाला और भारत की मुक्ति के लिये अपने प्राणों की भी बलि देने के लिए अपने को अंग्रेज पुलिस को अर्पण कर दिया, किन्तु मदनलाल ढींगरा ने अपना वक्तव्य, जो सावरकर जी द्वारा ही लिखा गया था, प्रसारित करने का प्रयत्न किया किन्तु धूर्त अंग्रेजी सरकार ने उसे छीन कर दबा डाला। यह सब होते हुए भी वीर सावरकर की योजना से वह वक्तव्य समाचार पत्रों तक पहुँच ही गया।

मदनलाल ढींगरा का वह वक्तव्य क्या था- एक विस्फोट था, हिन्दू युवकों को इस लड़ाई में कूदने का आह्वान था। राष्ट्र के नाम एक प्रेरक सन्देश था। यह वक्तव्य हिन्दू राष्ट्रीयता का दर्शन था। भारत की राष्ट्रीयता हिन्दुत्व ही है और हिन्दुत्व ही भारत की राष्ट्रीयता है। हिन्दुओं के लिए राष्ट्रभक्ति ही धर्म है, यह सब कुछ इस छोटे से वक्तव्य में 'समाहित' था। अन्तर्राष्ट्रीय कानून की दृष्टि से हिन्दुओं द्वारा अंग्रेजों को छिपकर मारना भी इस (संग्राम) में उचित है, यह राष्ट्रीय युद्ध है न कि

विद्रोह, यह सब इसी छोटे से वक्तव्य में लिख दिया गया- ताकि जर्मनी, फ्रांस, इटली, हॉलैण्ड आदि देशों का समर्थन अभिनव भारत के इस सशस्त्र अभियान को प्राप्त हो सके। इन सभी उद्देश्यों में वीर सावरकर को सफलता भी मिली। जिसका वर्णन इस छोटे से लेख में करना कठिन होगा।

वीर सावरकर अंग्रेजों की आँख की किरकिरी बन गये। गुप्तचर सावरकर का पीछा करने लगे। अंग्रेजी साम्राज्य सावरकर में अपना सशक्ततम शत्रु देखने लगा। भारत में सावरकर के अनुयायी पकड़े जाने लगे। श्री कन्हरे फाँसी पर चढ़ा दिये गये। सावरकर जी के बड़े भाई बाबाराव सावरकर को बन्दी बनाकर काले पानी भेज दिया गया। छोटे भाई नारायण भी आगे चल कर जेल में ठूँस दिये गये। स्वयं सावकर, अपने सहयोगियों को इस भयंकर कष्ट की स्थिति में देख इतने भावुक हो गये कि उन्होंने स्वयं बचकर काम करने की रणनीति को छोड़कर सामने आने का निश्चय कर लिया। वे स्वयं भी अंग्रेजों की कैद में आ गये।

इंग्लैण्ड से भारत लाये जा रहे बन्दी वीर सावरकर का जलपोत से कूद कर फ्रांस के तट पर पहुँचना विश्व भर में शौर्य का एक उदाहरण बन गया। अण्डमान की जेल में बैल की नाई कोल्हू चलाने, जेल की काल कोठरी में बन्दी सावरकर ने गोवा में ईसाई पुर्तगाली शासन के पैशाचिक अत्याचारों की दर्दभरी कहानी को लेकर मराठी में उत्कृष्ट महाकाव्य 'गोमान्तक' लिखा जो पीछे से हिन्दी सहित कई भाषाओं में अनुवाद किया गया।

सावरकर जी का एकमात्र लक्ष्य था पराधीन भारत को स्वतन्त्र करा कर विश्व का महानतम राष्ट्र बनाना। सन् १९२०-२१ में चले मुसलमानों के खिलाफत आन्दोलन के समय मालाबार के हिन्दुओं पर किये गये अमानुषिक अत्याचारों से आहात और विहव्ल होकर सावरकर जी ने जेल में ही 'मोपला' नामक उपन्यास लिखा। खिलाफत आन्दोलन को गान्धी जी का पूर्ण सहयोग मिलने से मुस्लिम समाज में ऐसा जनून भर गया कि उन्होंने भारत भर के अनेक नगरों में हिन्दुओं पर आक्रमण चालू कर दिये। वह भारत के इतिहास का एक काला अध्याय था, जब हिन्दू नेता मुसलमानों का जितना अनुनय-विनय करते उतनी ही उनकी उग्रता में वृद्धि हो रही थी। ऐसी स्थिति में भारत के विशुद्ध राष्ट्रवाद की व्याख्या के लिये 'हिन्दुत्व' नामक ग्रन्थ लिख कर हिन्दु राष्ट्रवाद को सशक्त आधार दिया। उन्होंने कहा हिन्दुत्व ही इस राष्ट्र का आधार है। यदि आधार ही अशुद्ध होगा, तो राष्ट्र-मन्दिर भी अशुद्ध, विकृत और दुर्बल होगा। हिन्दू हिन्दुत्व पर आधारित राजनीति को ही अपनाएँ और हिन्दू-मुस्लिम एकता के मोह में फंस कर अपने विशुद्ध राष्ट्रवाद से दूर न हो जाएँ। उन्होंने राष्ट्र को जो मन्त्र दिया था- ''राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दुओ का सैनिकीकरण''। ''धर्मान्तरण तो राष्ट्रान्तरण है'' (जहाँ-जहाँ अधिक संख्या में हिन्दू धर्मान्तरित हो गये वहाँ भारत, भारत न रहकर पाकिस्तान बन गया।)- यह सच्चाई अन्य सभी हिन्दूवादी नेता अनुभव करते हुए भी बोलने का साहस नहीं जुटा पाते थे। हिन्दुत्व के आधार पर हिन्दूमात्र का सैनिकीकरण यदि कर लिया जाये तो हम देखेंगे कि यह पिछड़ा, कमजोर समझा जाने वाला राष्ट्र विश्व की सर्वोच्च शक्ति बन जाये जैसे छोटा सा इस्राईल जनसंख्या में अपने से सौ गुने मुस्लिम देशों के समूह को नाकों चने चबवाता रहा। हिन्दू समाज ने वीर सावरकर के राष्ट्रोत्थान के इस मन्त्र की अवहेलना कर दी, किन्तु छोटे से देश इस्राईल ने सावरकर के इस मन्त्र को पूरी तरह ग्रहण कर लिया। स्वतन्त्र होते ही ६ लाख यहूदियों की जनसंख्या वाला इस्राईल केवल अपने यहूदी धर्म के आधार पर अपने राष्ट्र को फिर से खड़ा करने लगा। इस्राईल ने स्वतन्त्र होते ही घोषणा की थी कि इस्राईल संसार भर के यहूदियों का देश है। और प्रत्येक युवक-युवती को सैनिक प्रशिक्षण देकर सारे राष्ट्र को अपने से कई गुना बड़े शत्रु के आक्रमणों का मुकाबला करने के लिये उद्यत कर दिया। बस, फिर क्या था- सावरकरी मन्त्र काम कर गया। चकित विश्व ने देखा- नन्हें से नवीन राष्ट्र इस्राईल ने अरब देशों को युद्ध में परास्त कर डाला। छोटे से इस्राईल ने सावरकरी मन्त्र को सिद्ध किया।

यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि भारत ने अपने सर्वश्रेष्ठ नेता को भुला दिया। स्वतन्त्रता मिलते ही नेहरूवादियों ने सावरकर-विचार को मिटा डालने के भरपूर प्रयास किये। भारत की दुर्दशा बढ़ती चली गई। नागालैण्ड, मिजोरम जैसे भारत विरोधी ईसाई राज्यों का उदय हुआ। पाकिस्तान बनाने के अपराध-बोध से दबे हुए कई मुस्लिम संगठनों में अब पुनः कट्टरता, अलगाववाद और भारत विरोधी उग्रवाद बढ़ने लगा। पाकिस्तानी षड्यन्त्र बढ़ने लगे। हिन्दुओं को विभाजित किया जाने लगा। सीमाओं पर शत्रु दलों की घुसपैठ इतनी बढ़ गयी कि सीमाएँ असुरक्षित हो गई। देशभक्तों के अधिकार सीमित कर दिये गये। सन्देहास्पद आस्था वाले लोग शासन के ऊँचे पदों आसनों पर आसीन होने लगे और पता नहीं अभी और क्या-क्या हो, यदि अभी भी हिन्दू समाज सावरकर-विचारधारा को नहीं अपनाता। एकमात्र ''सावरकर की विचारधारा'' ही देश को, अब इन संकटों से बचा सकती है, इस विपन्न और म्रियमाण जाति का उद्धार कर सकती है। उस महान तेजपुंज राष्ट्रनायक वीर सावरकर जी को कृतज्ञ राष्ट्र का शत-शत नमन।

- ३३३, सुनहरी बाग अपार्टमेंट, सैक्टर-१३, रोहिणी, दिल्ली-११००८५

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१५ से २८ फरवरी २०१४ तक)

१. श्री अवनिश बंसल, नई दिल्ली २. श्री जी.के. शर्मा, अजमेर ३. श्री मुकेश कुमार महेश्वरी, अजमेर ४. श्री हरिकिशन आर्य, रोहतक, हरियाणा ५. श्री विजय सिंह गहलोत, अजमेर ६. श्री आयुष चौधरी, अजमेर ७. श्री रितु माथुर, अजमेर ८. डॉ. प्रवीण माथुर, अजमेर ९. श्रीमती दीपा, अजमेर १०. श्री अशोक कुमार गुप्ता, दिल्ली ११. श्री जनार्दन आर्य, गाजिपुर १२. जैनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली १३. श्रीमती विमला देवी, सोलान, हि.प्र.।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१५ से २८ फरवरी २०१४ तक)

१. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर २. श्री कृष्ण आर्य, नोएड़ा ३. श्री प्रदीप कपूर, अजमेर ४. श्रीमती सुधा मेहरा, अजमेर ५. श्री सनविद, अजमेर ६. श्रीमती सीता देवी, अजमेर ७. श्री मयंक, अजमेर ८. श्री विजयसिंह गहलोत, अजमेर ९. श्री कुलदीप सिंहल, अजमेर १०. राजपुताना म्युजिक हाऊस, अजमेर ११. श्री त्रिलोकचन्द वर्मा, अजमेर १२. श्री हेमराज, जोधपुर, राज. १३. डॉ. नेमीचन्द कमला, जोधपुर, राज. १४. डॉ. आर.पी. माथुर, अजमेर १५. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर १६. श्री कैलाश, नागौर, राज. १७. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर १८. श्री तुलसीराम नागवाल, अजमेर १९. गो सेवा ट्रस्ट, बरान, राज. २०. श्री राज गौरव, पुरणिया, बिहार।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार

(१ दिसम्बर से २८ फरवरी २०१४ तक)

१. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. २. श्रीमती सावित्री आर्या, करनाल, हरियाणा ३. श्री जोगेन्द्रसिंह, पानीपत, हरियाणा ४. श्री बलवानसिंह, झज्जर ५. श्री विनोद कुमार, कलवाली, हरियाणा ६. आर्यसमाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद, उ.प्र. ७. डॉ. रामावतार सिंहल, मेरठ, उ.प्र. ८. श्री धर्मसिंह कोठारी परिवार, जयपुर, राज. ९. श्रीमती अरुणा भागोत्रा, जम्मु १०. डॉ. शिवानी महाजन, शिमला, हि.प्र. ११. श्री सतीश मिगलानी, दिल्ली १२. श्री संजय वर्मा, गाजियाबाद १३. श्री अशु जोहर, नई दिल्ली १४. श्री आनन्द अनिल वीर, नई दिल्ली १५. श्री पद्मचन्द आर्य, गुड़गाँव, हरियाणा १६. श्री योगेशचन्द पालीवाल, शिकोहाबाद, उ.प्र. १७. श्री वीरपाल, पलवल, हरियाणा १८. डॉ. सतीशचन्द्र शर्मा, मेरठ, उ.प्र. १९. श्री राजवीरसिंह।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

वैदिक सूक्तियों में यज्ञ

- अशोक आर्य

वैदिक संस्कृति में यज्ञ का विराट् महत्व है। राम-कृष्ण ने यज्ञीय परम्पराओं का आजीवन पालन किया। महाभारत युद्ध के बाद यज्ञ लुप्त हो गये। जन सामान्य यज्ञ के महत्व को भूल गया। आर्यसमाज के प्रचार से भारत में यज्ञों का पुनः प्रचलन हुआ है। आर्यसमाजों में दैनिक, साप्ताहिक यज्ञ तो होते ही हैं, विशेष अवसरों पर बड़े-बड़े यज्ञों का भी आयोजन होता है। भारतवर्ष में सैकड़ों मत-मतान्तर यज्ञ का प्रचार-प्रसार नहीं करते।

अग्निहोत्र के लाभों की सूची अनगिनत है। वायु शुद्धि, आरोग्य, दीर्घायुष्य, वर्षा, दूध, अन्न, बल, ऐश्वर्य, सन्तान, पुष्टि, निष्पापता, सच्चरित्रता, जागृति, शत्रुविनाश, आत्मरक्षा, यश, तेजस्विता, वर्चस्विता, आनन्द, मोक्ष आदि की प्राप्ति अग्निहोत्र से बतायी गयी है। बाढ़, सूखा, भूकम्प, भीषण गर्मी आदि दैवीय प्रकोपों का निवारण होता है। ओजोन की परत का छेद भी यज्ञ से बन्द हो सकता है। निम्न वैदिक सूक्तियाँ इसकी साक्षी हैं।

१. **होतृषदनं हरितं हिरण्यम्।**
(अथर्व. ७/९९/१)
यज्ञ करने वाले का घर अत्यन्त मनोहर, धन-धान्य से परिपूर्ण, हितकारी और रमणीय होता है।

२. **ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम्।**
(अथर्व. १८/४/२)
यज्ञ करने वाले पुण्यात्मा स्वर्गलोक=सुख विशेष को प्राप्त करते हैं।

३. **भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते।**
यज्ञकर्त्ता यजमान को भद्रशक्ति प्राप्त होती है।

४. **अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।**
(ऋग्वेद १/१६४/३५)
यह यज्ञ भुवन का केन्द्र है।

५. **सहस्रंभरः शुचिजिह्वो अग्निः।**
(ऋग्वेद २/९/१)
पवित्र ज्वाला वाला यज्ञाग्नि सहस्र लाभ पहुँचाता है।

६. **यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे**
(ऋग्वेद २/२१/५)
कर्मपरायण लोग यज्ञ से सन्मार्ग की दिशा पाते हैं।

७. **विप्रो यज्ञस्य साधनः।**
(ऋग्वेद ३/२७/८)
बुद्धिमान् मनुष्य यज्ञ का साधक होता है।

८. **नासिष्वेरापिर्न सखा न जामिः।**
अयाज्ञिक का कोई बन्धु, सखा या सम्बन्धी नहीं होता।

९. **मा यज्ञो अस्य स्रिधदृतायोः।**
(ऋग्वेद ७/३४/१७)
सत्य के पुजारी का यज्ञ विफल नहीं होता।

१०. **ईजानस्तरति द्विषः।**
(ऋग्वेद ७/५९/२)
यज्ञ करने वाला द्वेषियों को जीत लेता है।

११. **प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते।**
(ऋग्वेद ७/६१/४)
यज्ञ में मन लगाने वाले यजमान का बल बढ़ता है।

१२. **इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम्।**
(ऋग्वेद ८/२/१८)
यज्ञ करने वाले से विद्वान् लोग प्रीति करते हैं।

१३. **यज्ञो वितन्तसाय्यः।**
(ऋग्वेद ८/६८/११)
यज्ञ सर्वत्र सुख फैलाने वाला है।

१४. **अतमेरुर्यज्ञः।**
यज्ञ ग्लानि मिटाने वाला है।

१५. **ऊर्ध्वोऽवर आस्थात्।**
यज्ञ सबसे ऊपर स्थित है।

१६. **यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम्।**
(यजु. ८/४)
यज्ञ विद्वानों को सुख पहुँचाता है।

१७. **सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।**
(यजु. १२/४४)
यजमान की कामनाएँ पूर्ण हो।

१८. **तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः। सहाग्निना**
(यजु. २०/२५)
वह देश पुण्यवान है, जहाँ विद्वान् अग्निहोत्र करते हैं।

१९. **सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यत।**
(अथर्व. ३/३०/६)
सब मिलकर अग्निहोत्र किया करो।

२०. **अग्नेर्होत्रेण प्र णुदे सपत्नान्।**
(अथर्व. ६/२/६)

अग्निहोत्र से मैं रोगादि शत्रुओं को दूर करता हूँ।

२१. समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति।

(अथर्व. १२/२/११)

प्रज्वलित यज्ञाग्नि अपनी सुपावकता से वायु मण्डल को पवित्र करती है।

२२. अग्निहोत्रे वै सर्वे यज्ञक्रतवः।

(मै.सं. १/८/६)

अग्निहोत्र में सब यज्ञ कर्म समाविष्ट हैं।

२३. यज्ञो वै सुतर्मा नौः।

(का.श.ब्रा. ३/१/८/२)

अग्निहोत्र से अश्वमेध का फल मिल जाता है।

२४. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।

(श.ब्रा. १/७/१/५)

यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है।

२५. शतोन्मानो वै यज्ञः

(श.ब्रा. १२/७/२/१३)

यज्ञ सैकड़ों उत्थान देने वाला है।

आर्य सदन, १४, काली बाड़ी, बरेली, उ.प्र.

न्याय-दर्शन का अध्यापन

महर्षि गौतम प्रणीत **न्याय-दर्शन** और उस पर लिखा **वात्स्यायन-भाष्य** प्रमाण व अर्थतत्त्व को समझने की प्रक्रियाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। सभी वैदिक-अवैदिक दर्शनों को अपने मान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय इस पद्धति का प्रयोग करना अपेक्षित होता है। न्याय-दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय '**प्रमाण**' है। '**प्रमाण**' को ठीक प्रकार जानने से ही तत्त्वनिश्चय ठीक हो पाता है, तभी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो पाता है। प्रमाण ज्ञान से चिंतन-विचार की प्रक्रिया ठीक हो पाती है, नहीं तो अनजाने में मिथ्या सिद्धान्त गले पड़ जाते हैं। न्याय-दर्शन के अध्ययन से किसी भी बात की परीक्षा-समीक्षा की सामर्थ्य बढ़ती है और उचित-अनुचित का निर्णय सरलता-शीघ्रता-शुद्धता से हो पाता है। इस प्रकार यह शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में स्वामी विष्वङ् द्वारा (वैशाख शुक्ल द्वितीया २०७१, १ मई २०१४) से इसका विधिवत् नियमित संपूर्ण अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन १०-११ महीनों में मार्च-अप्रैल २०१५ तक पूर्ण होगा। इस बीच प्रत्येक अध्याय की लिखित परीक्षा भी ली जायेगी। कुल ५ परीक्षाएँ होंगी। इनमें ७५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को '**न्यायाचार्य**', ६१ से ७५ प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-विशारद**' व ५१ से ६० प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-प्राज्ञ**' की उपाधि दी जायेगी। इस कक्षा में संस्कृत से परिचित साधक प्रकृति के ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। इसमें बुद्धिमान्, स्वस्थ, अपने कार्यों को स्वयं करने में समर्थ, सेवाभावी, अनुशासन में रह सकने वाले अधिकतम २० पूर्णकालिक व्यक्तियों का स्थान है।

इस काल में प्रात: व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

संयुक्त राष्ट्र के पुरोहित गण एड्स सम्बन्धित बीमारी के शिकार

संयुक्त राष्ट्र के सैकड़ों रोमन कैथोलिक पुजारी एड्स सम्बन्धित बीमारी से ग्रस्त होकर मृत्यु का ग्रास बन गये हैं, ''कन्सास सिटी स्टार'' की रिपोर्ट के अनुसार सैकड़ों पुजारी इस बीमारी से ग्रस्त होकर अभी जीवित हैं।

समाचार पत्र ने अपने संस्करण में लिखा है कि एड्स नामक बीमारी से मरने वालों की वास्तविक संख्या बतलाना अतिकठिन है। चिकित्सा शास्त्र के विशेषज्ञ तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी आंकड़ों के अन्तर्गत (जो कन्सास सिटी स्टार ने ज्ञात किये हैं) संयुक्त राष्ट्र की सामान्य आबादी के अनुपात में एड्स से मरने वाले पुजारियों की संख्या कम से कम चार गुणा की दर से अधिक है।

चर्च से सम्बन्धित इन धर्मप्रदेशों व धर्माध्यक्षों की मृत्यु को देखते हुए अब यह निर्णय लिया गया है कि पुरोहितों का अभिषेक करने से पूर्व एड्स (एच.आई.वी.) की प्रतिरोधक क्षमता का परीक्षण किया जावे, तत्पश्चात् ही इन लोगों को इस पद पर आसीन किया जावे।

राष्ट्र की आबादी जो ६० लाख कैथोलिक ईसाइयों की है, उनके ऊपर ४६,००० पुजारी हैं अतः एड्स का मुद्दा प्रत्यक्ष रूप से चर्च के धर्म सिद्धान्तों से सम्बन्धित है। धर्म सिद्धान्तों के अन्तर्गत अनुकम्पा व क्षमा की बाते हैं लेकिन इसके साथ समलिंगी कामियों का पाप भी जुड़ा हुआ है तथा जो आधुनिक सुरक्षित यौन क्रिया का विरोध करता है।

३००० पुजारियों का एक गोपनीय सर्वेक्षण 'स्टार पत्र' ने किया उसमें पाया गया कि उनमें से जो ८०० पुजारी थे तथा जिन पर स्तुति करने की जिम्मेदारी थी, एड्स नामक बीमारी से पीड़ित पाये गये। चर्च प्रायः उनको इलाज करने का खर्चा देता है तथा जब तक वे मर नहीं जाते उनकी परिचर्या करता है।

अधिकांश पादरियों का कहना है कि प्रभावशाली यौन शिक्षा, जो प्रारम्भ में ही मिलनी चाहिए थी, उसे चर्च उपलब्ध कराने में निष्फल रहा। उनमें दो तिहाई का कहना है कि शिक्षणालयों में कामुकता पर ना तो कोई सम्बोधन किया गया तथा न ही वाद-विवाद किया गया। तीन चौथाई का कहना है कि यौन सम्बन्धी विषयों पर उन्हें पर्याप्त शिक्षा देनी चाहिये।

''कामुकता विषय पर बातचीत की अति आवश्यकता है तथा इसको किस प्रकार व्यवहार में लाया जाये'' यह शब्द रेवरेण्ड डेनिस रौच के हैं। एक धर्मप्रचारक पादरी जिसे स्वयं को एड्स है, मियामी के महाधर्माध्यक्षत्व के अन्तर्गत कैथोलिक दान संस्थाओं के लिये एड्स पर मन्त्री मण्डल निर्मित कर एक कार्यक्रम चला रहे हैं, उनका कहना है कि ''मैं पिछले कई वर्षों से यहाँ शिक्षण संस्थान बनाने का प्रयत्न कर रहा हूँ जिसके अन्तर्गत साथियों को इस बात का ध्यान रहे कि इस बीमारी से कैसे बचा जाए, अतः वे जब यहाँ से निकलें तो कम से कम उन्हें इस बीमारी की जानकारी हो।''

अनभिज्ञता के कारण गिरजाघरों में अनुभवहीन पादरियों को रखा हुआ है। उनको जब १९६० और १९७० के वर्ष में शिक्षण संस्थान में प्रवेश करवाया गया तो उनमें से कुछ कि आयु १४ वर्ष की थी। वे कामुक दुनिया को तथा उसके प्रलोभनों को लेकर बिल्कुल अशिक्षित थे।

इसके अलावा उनके साथ समलैंगिकता का घृणास्पद कर्म किया जाता था और शर्मनाक तरीके से ब्रह्मचर्य व्रत का नाश किया जाता था फिर भी चर्च की पवित्र आत्मायें मौन रहती थी, यह बातें तो स्टार पत्र ने लिखी हैं कि वे तथ्यपूर्ण हैं तथा उनका पुख्ता जरिया है। समाचार पत्र ने कहा है कि संयुक्त राष्ट्र में जो मूल रोमन कैथोलिक हैं तथा चर्च में जिनकी उच्च श्रेणी है वे इस पतन के विषय को लेकर बहस करने का निवेदन कर रहे हैं। स्थानीय धर्माध्यक्ष पादरियों के लिये यह भविष्य सूचक प्रश्न है जो उनका इस प्रसंग को लेकर किया गया है।

(उपरोक्त लेख मंगलवार १ फरवरी २००० को ''टाइम्स ऑफ इण्डिया'' बैंगलूर सिटी के संस्करण से साभार हिन्दी अनुवाद कर प्रकाशित किया है।)

आस्था भजन (चैनल) पर प्रवचन

स्वामी रामदेव जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने चैनल पर दो घण्टे का समय देकर वैदिक विद्वानों के प्रवचन की शृंखला प्रारम्भ की है। उसी क्रम में परोपकारिणी सभा द्वारा भी वैदिक विद्वानों के प्रवचन के प्रसारण की योजना बनाई गई। इस हेतु विगत ८-१० माह से ऋषि उद्यान परिसर में विडियो रिकॉर्डिंग का कार्य चल रहा है।

अब स्वामी रामदेव जी द्वारा इन प्रवचनों का 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ८ बजे तक प्रसारण प्रारम्भ कर दिया गया है। जिसके अन्तर्गत **७.०० से ७.२०** तक **डॉ. धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन तथा **७.३० से ७.५०** तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन विषयक प्रवचन सुने जा सकते हैं।

इस कार्य के लिए सभा और समस्त आर्यजगत् की ओर से स्वामी रामदेव जी का धन्यवाद करते हैं और आभार मानते हुए प्रभु से उनके इस सामर्थ्य और भावना को बनाये रखने की कामना करते हैं तथा उनके दीर्घायुष्य व उत्तम स्वास्थ्य की प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

सभी धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

विश्व पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश की धूम

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार) के तत्त्वावधान में ९ दिवसीय विश्व पुस्तक मेले का आयोजन दिनांक १५-२३ फरवरी २०१४ को देश की राजधानी-दिल्ली के प्रगति मैदान में किया गया। इस मेले का आयोजन प्रति दो वर्षों में किया जाता है। उद्‌घाटन महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा किया गया, इस मैदान में अनेक विशालकाय कक्ष बनाये गये हैं। पुस्तक मेले के लिए आठ विशाल कक्षों का प्रयोग किया गया जिनमें विभिन्न पुस्तक विक्रेताओं व प्रकाशकों के अनुमानतः १० हजार स्टॉल थे।

स्टॉलों पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, धर्म, दर्शन, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी साहित्य, बाल साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकें विक्रय के लिए उपलब्ध थी। पुस्तकालयों एवं पुस्तक प्रेमियों के लिए एक सुनहरा अवसर था, वे अपनी मन चाही पुस्तकें एक ही स्थान पर क्रय कर सकते थे। कई कथाकार, लेखक, सम्पादक, विद्यार्थी, अध्यापक, शोधार्थी देश के विभिन्न भागों से प्रति दिन पुस्तक मेले को देखने आ-जा रहे थे। लेखक मञ्च व साहित्य मञ्च के माध्यम से विभिन्न सभागारों में प्रतिदिन, कविता, पत्रवाचन, लोकार्पण आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे। इसकी सूचना दैनिक बुलेटिन- 'मेला वार्ता' हिन्दी अंग्रेजी में प्रसारित की जाती थी।

परोपकारिणी सभा, अजमेर की ओर से इस मेले में स्टॉल बुक करायी गयी। यह स्टॉल हॉल नं. १८ में ७४ नम्बर का था। इस अवसर पर सभा द्वारा पाँच हजार सत्यार्थप्रकाश हिन्दी भाषा में, दो हजार सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी भाषा में, पाँच हजार ऋषि जीवन हिन्दी भाषा में तथा चार हजार लघु पुस्तिका, दयानन्द दी ग्रेट उपरोक्त इन सभी का निःशुल्क वितरण किया गया। साथ ही हजारों की संख्या में सी.डी. (पी.डी.एफ. फाइल) जिसमें २३ भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश एवं महर्षि दयानन्द के अन्य ग्रन्थ अंकित थे, भी निःशुल्क दी गई। सभा की इस योजना की कई सुधि लोगों ने प्रशंसा की व जागृति का प्रतीक बताया। पुस्तकों के वितरण के लिए हजारों पत्रक स्टॉल पर एवं हॉल के बाहर विभिन्न स्थानों पर बाँटे गये थे। जिसे पढ़कर लोग इस स्टॉल तक आसानी से पहुँच सके।

विश्व प्रसिद्ध ''सत्यार्थ प्रकाश एवं महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती को जन-जन तक पहुँचाने का अद्‌भुत प्रेरणा दायक एक स्तुत्य प्रयास किया गया।''

यह प्रयास वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का उत्तम प्रकार है। यह कार्य आर्य जनता के सहयोग से सफल हो सका, सभा सभी सहयोगी सदभावी जनों का हार्दिक आभार व्यक्त करती है तथा भविष्य में सहयोग की आशा रखती है।

प्रस्तुतकर्त्ता- वासुदेव आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर

जिज्ञासा समाधान – ५९

-आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- परम आदरणीय आचार्य जी, चरण वन्दन नमस्ते

विनम्र निवेदन यह है कि सामान्य ज्ञान व आत्मा परमात्मा से सम्बन्धित शंकायें हैं। कृपया लिखित समाधान देने की कृपा करें।

(क) आत्मा को निराकार माना गया है व है भी। किन्तु हमारे समाज के जुड़े साधकों में अणुरूप व केश (बाल) के दस हजारवें भाग के उपमा के कारण साकार मानते हैं। साथ ही तर्क देते हैं कि निराकार परमात्मा में निराकार आत्मा कैसे रह सकता है तथा मृत्यु होती है तो उस निराकार आत्मा को निकलने के लिए रास्ता क्यों देखना पड़ा। यदि वह निराकार है तो इसके लिए वह सिद्धान्त, तर्क, वेद मन्त्र, उपनिषद् के माध्यम से लिखित में चाहते हैं जिससे अपने पक्ष को प्रस्तुत किया जा सके। कुछ विद्वान् सुख-दु:ख आत्मा का स्वाभाविक गुण नहीं मानते हैं। कृपया आत्मा के स्वरूप को शुद्ध रूप में बताएँ?

(ख) मन को प्रकृति से बना जड़ बताया है किन्तु अनेक भजनों में चंचल कहा है। शिव संकल्प में यह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो, कहा है, जैसे वह चेतन हो।

(ग) मन में बुरे विचार हम लाते हैं या स्वयं आ जाते हैं। उन बुरे विचारों से बचने का उपाय भी बताने की कृपा करें।

(घ) किसी व्यक्ति के अपराध को क्षमा करने पर कर्म फल से क्या बचेंगे?

(ङ) व्यक्ति ने पेड़ लगाया या संस्था चलाई, क्या मृत्यु के बाद ही पुण्य मिलेगा?

(च) उद्धगीत प्राणायाम है या जप? श्वास व प्राण में क्या अन्तर है व प्राण तत्त्व क्या है?

डॉ. अशोक कुमार गुप्त, ग्रा.पो. चांदपुरी, बेहट रोड, वेद मन्दिर, सहारनपुर, उ.प्र.

समाधान (क) आत्मा निराकार है, यह युक्ति तर्क व प्रमाणों से सिद्ध है, इसको आप भी मानते हैं। किन्तु कुछ साधकों की मान्यता है कि आत्मा साकार है, इस आधार पर आपने जिज्ञासा भेजी है। इस विषय में कुछ लिखने से पहले हम साकार मानने वालों से कुछ प्रतिप्रश्न कर रहे हैं कि ऐसा कहाँ लिखा है आत्मा साकार है? साकार मानने वाले, साकार की परिभाषा क्या मानते हैं, साकार कहते किसे हैं? कहाँ लिखा है कि निराकार में निराकार नहीं रह सकता? बिना प्रमाण के बात कहना, समाज में भ्रम फैलाना है।

जो वस्तु अनेक अवयवों से मिलकर बनी हो और जिसमें रूप गुण हो उसको साकार कहते हैं अर्थात् जो आँखों से दिखाई देवे वह साकार कहाता है। इस परिभाषा के अनुसार न तो आत्मा अनेक अवयवों से मिलकर बना और न ही उसमें रूप गुण है, इसलिए आत्मा साकार सिद्ध नहीं हो रहा है। यदि साकार की परिभाषा यह करें कि जो पदार्थ इन्द्रियों से प्रतीत होता है, वह साकार कहाता है, तो भी आत्मा साकार सिद्ध नहीं हो रहा। क्योंकि वह गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द इन इन्द्रियों के विषयों से परे है और भी यदि साकार की परिभाषा यह की जाये कि जो प्रकृति से बना है वह साकार कहाता है, तो भी आत्मा साकार सिद्ध नहीं होगा क्योंकि वह प्रकृति से नहीं बना, उसकी अपनी स्वतन्त्र चेतन सत्ता है।

शास्त्रों में ईश्वर को स्थान की दृष्टि से महत् परिमाण वाला और आत्मा को अणु परिमाण वाला कहा है। यहाँ परिमाण का अर्थ वैसा आकार कदापि नहीं है जैसा अनेक अवयव मिलकर एक द्रव्य रूप आकार बनता है। परिमाण का अर्थ यह है कि, किसी पदार्थ की इयत्ता कितनी है, वह कितने स्थान में है, उसका घेरा कितना है। शास्त्र में जहाँ भी आत्मा को अणुरूप, अणुस्वरूप, अणुमात्र कहा है, वहाँ आत्मा के अत्यन्त सूक्ष्मस्वरूप को बताने के लिए है कि आत्मा अत्यल्प परिमाण वाला है। अणुरूप कहने से आत्मा का भौतिक द्रव्यों की भाँति आकार नहीं मान सकते, न ही मानना चाहिए, हाँ स्थान की दृष्टि से आत्मा इतने स्थान में रहता है, इस रूप में उसका आकार कह सकते हैं, इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।
भागो जीवः स विज्ञेयः चानन्त्याय कल्पते।।

इस उपनिषद् वचन में भी जो जीव को बाल (केश) के सौवें भाग के सौ खण्ड करें उनमें से एक भाग जितना आत्मा है। यह कहना आत्मा के अत्यल्प परिमाण को दर्शाने के लिए ही है कि वह बहुत छोटा, अणु परिमाण वाला है। इस उपनिषद् वचन से, आत्मा साकार है ऐसा अर्थ कहीं से भी नहीं निकल रहा।

आत्मा को साकार मानने वालों का यह कहना कि निराकार परमात्मा में निराकार आत्मा कैसे रह सकता है, उनके बालपन को सिद्ध करता है। उनको ज्ञात होना चाहिए कि जैसे साकार वस्तुएँ एकदेशीय होती हुई निराकार परमात्मा

में रहती हैं, वैसे ही एकदेशीय निराकार आत्मा भी निराकार परमात्मा में रहता है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि आत्मा और परमात्मा दोनों निराकार होते हुए, दोनों में सूक्ष्म और अतिसूक्ष्म रूप से भेद है। आत्मा सूक्ष्म है और परमात्मा अतिसूक्ष्म है अर्थात् परमात्मा सूक्ष्म और आत्मा उससे कुछ स्थूल है। इस विषय में महर्षि दयानन्द प्रश्न पूर्वक सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं- ''**प्रश्न**- जिस जगह में एक वस्तु होती है, उस जगह में दूसरी नहीं रह सकती। इसलिए जीव और ईश्वर का संयोग सम्बन्ध हो सकता है, व्याप्य-व्यापक का नहीं।

उत्तर- यह नियम समान आकार वाले पदार्थों में घट सकता है, असमान आकृति में नहीं।..... वैसे जीव परमेश्वर से स्थूल और परमेश्वर जीव से सूक्ष्म होने से परमेश्वर व्यापक और जीव व्याप्य है।'' महर्षि के इस वचन से एक बात तो यह निकली कि इयत्ता की दृष्टि से आत्मा और परमात्मा दोनों आकार वाले हैं अर्थात् एक व्याप्य रूप है और दूसरा व्यापक रूप है, एक एकदेशीय है और दूसरा सर्वदेशीय है। दूसरी बात यह कि आत्मा परमेश्वर से कुछ स्थूल है। कुछ स्थूल होने से निराकार आत्मा निराकार परमात्मा में व्याप्य रूप से रहता है। उसके इस प्रकार रहने में कहीं कोई आपत्ति नहीं है।

मृत्यु के समय निराकार आत्मा को शरीर से निकलने के लिए रास्ता क्यों देखना पड़ा? साकार मानने वालों का यह कथन भी आत्मा के स्वरूप को ठीक से न समझने के कारण से है। रास्ता क्यों देखना पड़ा इसका उत्तर है, वैसे शरीर छोड़ते समय स्थान विशेष से निकलता है। यह सब परमेश्वर की व्यवस्थाधीन है।

आत्मा निराकार है इसके लिए हम यहाँ महर्षि दयानन्द के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं-

१. ''इसी प्रकार भक्तों की उपासना के लिए ईश्वर का कुछ आकार होना चाहिए, ऐसा भी कुछ लोग कहते हैं, परन्तु यह कहना भी ठीक नहीं है क्योंकि शरीर स्थित जो जीव है, वह भी आकार रहित है, यह सब कोई मानते हैं अर्थात् वैसा आकार न होते हुए भी हम परस्पर एक दूसरे को पहचानते हैं और प्रत्यक्ष कभी न देखते हुए भी केवल गुणानुवादों ही से सद्भावना और पूज्य बुद्धि मनुष्य के विषय में रखते हैं।'' देखें पू.प्र.व्या. १

२. ''मूर्त पदार्थों के बिना ध्यान कैसे बनेगा?

उत्तर- शब्द का आकार नहीं तो भी शब्द ध्यान से आता है वा नहीं? आकाश का आकार नहीं तो भी आकाश का ज्ञान करने में आता है वा नहीं?'' पू.प्रा.व्या. ४

३. ''१६.३ बदला दिये जावेंगे कर्मानुसार।। और प्याले हैं भरे हुए।। जिस दिन खड़े होंगे रुह और फरिश्ते सांफा बान्धकर।। मं. ७/सि. ३०/सू. ७८/ आ. २६/३४/३८

समीक्षा- यदि कर्मानुसार फल.... और रूह निराकार होने से वहाँ खड़ी क्योंकर हो सकेगी।'' स.प्र. सम्मु. १४ (द.ग्रं.मा. भाग एक, सं. १२९वाँ बलिदान समारोह २०१२)

इत्यादि स्थानों पर महर्षि दयानन्द ने जीवात्मा को स्पष्ट रूप से निराकार कहा और लिखा है। इन सब प्रमाणों से जीवात्मा निराकार सिद्ध होता है, सिद्ध है।

हाँ सुख-दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण नहीं हैं, किन्तु मन के द्वारा सुख-दुःख को अनुभव करने का सामर्थ्य जीवात्मा का स्वाभाविक है। सुख-दुःख निमित्त से उत्पन्न और नष्ट होते हैं, उनके उत्पन्न और नष्ट होने पर आत्मा उनको अनुभव करता है। महर्षि दयानन्द ने भी आत्मा की २४ स्वाभाविक शक्तियों में सुख-दुःख का कथन नहीं किया है। इससे भी पता चलता है कि सुख-दुःख आत्मा के अपने स्वभाविक नहीं हैं नैमित्तिक हैं।

आत्मा का स्वरूप वेद आदि सत्य शास्त्रों में दिया हुआ है। वह स्वभाव से पवित्र, धार्मिक, अविनाशी, निराकार, परिच्छिन्न (एकदेशीय), पदार्थों को प्राप्ति की अभिलाषा करने वाला, दुःखादि की अनिच्छा करने वाला, सुख-दुःख की अनुभूति करने वाला, शरीर को प्राप्त कर सन्तानोत्पत्ति कर उनका पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे-बुरे कर्म करने वाला, कर्म करने में स्वतन्त्र व फल भोगने में परतन्त्र, अल्पज्ञ, अपनी २४ स्वाभाविक शक्तियों से युक्त जन्म-मरण, बन्ध-मोक्ष में जाने-आने वाला आदि स्वरूप से युक्त आत्मा है।

(ख) निश्चित रूप से प्रकृति से बना मन जड़ पदार्थ है, वह आत्मा का महत्त्वपूर्ण साधन है। इसी से आत्मा सुख-दुःखादि की अनुभूति करता है। परमेश्वर ने मन को अतिवेगवान् बनाया है, यह आत्मा के संकल्पमात्र से क्रियाशील हो जाता है, इसलिए इसको चंचल कहा है। अनेक बार जड़ पदार्थों को भी चेतनवत् कह दिया जाता है। इसी कारण हम व्यवहार में ऐसा कथन करते हैं, कर देते हैं। जैसे मेरा हाथ ऊपर उठा, मेरी आँख ने अमुक दृश्य देखा, मेरी जिह्वा ने इसको चखा, मेरा मन भिन्न विषय में चला गया आदि। ये हाथ, आँख, जिह्वा, मन सब जड़ पदार्थ हैं। इनमें स्वयं (अपने आप) कुछ भी करने का सामर्थ्य नहीं है, फिर भी इनका चेतनवत् कर्ता के रूप में व्यवहार होता है, यह सब गौण रूप में कथन है। यथार्थ में इन सबको चलाने वाला आत्मा है। ऐसा ही शिव संकल्प वाले मन्त्रों में समझना चाहिए।

(ग) मन में बुरे विचार हम स्वयं भी लाते हैं और किसी आलम्बन से भी उठते भी हैं। परमेश्वर ने हमारे कल्याण के लिए मन को इस प्रकार का बनाया है कि जब

हम इससे विचार करना चाहें तब कर सकें और न करना चाहें न कर सकें, यह हमारी इच्छा पर निर्भर है। दूसरा किसी आलम्बन विशेष से हमारे प्रयत्न न करने पर भी मन में विचार उठने लगते हैं। जैसे-जैसे संस्कार हमारे मन में प्रबल रूप से बने हुए हैं, उन-उन संस्कारों का आालम्बन बनने पर तत्-तत् सम्बन्धी स्मृतियाँ हमारे बिना प्रयत्न के आने लगती हैं, उठने लगती हैं। यह व्यवस्था हमारे कल्याणार्थ परमेश्वर ने कर रखी है, यदि परमेश्वर ऐसा न करता तो हमारा व्यवहार, प्रयोजन ठीक से सिद्ध न हो पाता।

बुरे विचारों से बचने का उपाय तत् सम्बन्धी आलम्बन से दूर रहना, अभ्यास, वैराग्य, प्रतिपक्ष भावना आदि है। मनरूपी नदी की विचारधारा पाप व पुण्य दोनों ओर बहती है, उसको पाप की ओर से रोक पुण्य की ओर चलाने के लिए यम-नियमादि साधनों का अनुष्ठान कर पुरुषार्थ पूर्वक यत्न करते रहने को अभ्यास कहते हैं। ऐसा करने पर मन में सुसंस्कारों का संचय अधिक से अधिक होगा, इससे हम बुरे विचारों से बचेंगे, बुरे विचार नहीं उठायेंगे, नहीं उठेंगे। वैराग्य से भी बुरे विचारों से बचा जाता है, जिसका जितने स्तर का वैराग्य होगा वह उतने ही स्तर पर अपने मन को बुरे विचारों से बचाये रखेगा। संसार के विषय में दुःख देखकर उससे विरत होने का नाम वैराग्य है। प्रतिपक्ष भावना मन के बुरे विचारों को रोकने का प्रबल उपाय है, जब-जब मन में बुरे विचार उठाते हैं तब-तब प्रतिपक्ष भावना को प्रबलता से करें तो सद्यःफल दिखेगा। बुरे कामों, विचारों को करने-करवाने समर्थन करने में अत्यन्त दुःख व अत्यन्त अज्ञान की प्राप्ति होने को देखना, बुरे कामों, विचारों को करने में अपनी बहुत बड़ी हानि को सामने रखकर चलना प्रतिपक्ष भावना कहाती है। इससे बुरे विचारों से बचकर श्रेष्ठता की ओर व्यक्ति अग्रसर होता है। ये सब उपाय बुरे विचारों से बचने के हैं।

इन सब उपायों का उपाय ज्ञान है। जितना हमारा ज्ञान का स्तर होगा उतना ही हम उपरोक्त उपायों को कर सकेंगे और जितना-जितना हम इन उपायों को करेंगे उतना-उतना मन के बुरे विचारों से दूर रहेंगे।

(घ) किसी व्यक्ति के अपराध क्षमा करने पर, क्षमा होने वाला व्यक्ति कर्म फल से नहीं बचेगा। जिसने जिस स्तर का अपराध किया है, उसको वैसा उतना फल भोगना ही पड़ेगा, यही वेदादि शास्त्र का नियम है। अपराध का दण्ड मिलना, उसको भोगना यह सब हमारे लिए कल्याणकारी है, इसी से हमारे पाप कर्म नष्ट होते हैं। भले ही सांसारिक व्यक्ति किसी के अपराध को क्षमा कर देवे किन्तु परमेश्वर पाप कर्म-अपराध को क्षमा नहीं करता। महर्षि दयानन्द इस विषय में प्रश्नपूर्वक स.प्र. में लिखते हैं-

''**प्रश्न**- ईश्वर अपने भक्तों के पाप क्षमा करता है वा नहीं?

उत्तर- नहीं। क्योंकि जो पाप क्षमा करे तो उसका न्याय नष्ट हो जाय और सब मनुष्य महापापी हो जायें। क्योंकि क्षमा की बात सुन के उनको पाप करने में निर्भयता और उत्साह हो जाये। जैसे राजा अपराधियों के अपराध क्षमा कर दे तो वे उत्साहपूर्वक अधिक-अधिक बड़े-बड़े पाप करे, क्योंकि राजा अपना अपराध क्षमा कर देगा और उनको भी भरोसा हो जाये कि राजा से हम हाथ जोड़ने आदि चेष्टा कर अपने अपराध छुड़ा लेंगे। और जो अपराध नहीं करते, वे भी अपराध करने से न डर कर पाप करने में प्रवृत्त हो जायेंगे। इसलिए सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है, क्षमा करना नहीं।'' महर्षि के इस वचन से ज्ञात होता है कि कर्म तो भोगना ही पड़ेगा।

(ङ) पुण्य तो वृक्ष लगाने, संस्था चलाने वा पुस्तक लिखने रूपी कर्म के साथ-साथ ही मिल जाता है। हाँ उस पुण्य का फल कब मिलता है यह विचारणीय है। कर्मफल देना परमेश्वर के आधीन है। वह जब उचित समझता है और जब हमारे कर्म, फल देने की ओर उन्मुक्त होते हैं तभी परमेश्वर फल देता है। वह फल इस जन्म में अथवा मृत्यु के बाद अगले जन्मों में भी होता है, हो सकता है।

(च) यह उद्धगीत शब्द न होकर उद्‌गीथ ऐसा शब्द है, इस उद्‌गीथ का बिगड़ा हुआ रूप उद्‌गीत है। यह उद्‌गीथ न प्राणायाम है और न जप है, इसको ओ३म् का पर्यायवाची शब्द समझें। जैसे- ओ३म् को प्रणव कहते हैं, वैसे इसको उद्‌गीथ भी कहते हैं। उद्‌गीथ का अर्थ महर्षि दयानन्द लिखते हैं ''**य उद्‌गीयत उच्चैः शब्द्यते स उद्‌गीथः, सामध्वनिः, प्रणवो वा।**'' उ.कोष. २.१० जो ऊँचे स्वर से गाया जाता वह उद्‌गीथ कहाता, वह गाया जाने वाला सामगान हो अथवा ओ३म् हो वही उद्‌गीथ है। इस उद्‌गीथ के विषय में छान्दोग्य उपनिषद् में विस्तार से वर्णन किया है। वहाँ से दो प्रसंग यहाँ लिखते हैं-

ओमित्येतदक्षरमुद्‌गीथमुपासीतोमिति ह्युद्‌गायति तस्योपव्याख्यानम्।। छा.उ. १.४.१।। ओम्- यह अक्षर 'उद्‌गीथ' है, इस उद्‌गीथ की उपासना कर....।

अथ खलु य उद्‌गीथः स प्रणवो यः प्रणव स उद्‌गीथ इति। छा.उ. १.६.५

जो उद्‌गीथ है, वही प्रणव है, जो प्रणव है, वही उद्‌गीथ है। इन उपनिषद् वचनों से ज्ञात हो रहा है कि ओम्-प्रणव-उद्‌गीथ एक ही है। इस विषय में सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार लिखते हैं- ''ओंकार के लिए ऋग्वेदी

'प्रणव' शब्द का प्रयोग करते हैं, सामवेद 'उद्गीथ' शब्द का। यहाँ कहा गया है कि 'प्रणव' तथा 'उदगीथ' एक ही हैं......।''

श्वास शरीर में प्राणवायु को लेने और छोड़ने का नाम है और शरीर को धारण करने वाली जीवनशक्ति का नाम प्राण है। दोनों में अन्तर विशेष नहीं है। यदि अन्तर करना चाहे तो एक में वायु को लेना और छोड़ना क्रिया विशेष दूसरे में जीवनी शक्ति विशेष है। प्राण शब्द का भिन्न-भिन्न प्रसंगों में भिन्न-भिन्न अर्थ मिलता है। मुख्य रूप से शरीर को धारण करने वाला, जीवन का मूल शरीरस्थ वायु विशेष का नाम प्राण शब्द से रूढ़ हो गया है। प्राण शब्द के अन्य अनेक अर्थों में परमात्मा, आत्मा, मन, इन्द्रियाँ, बल, ऊर्जा, शक्ति, सामर्थ्य, प्रिय व्यक्ति विशेष, चन्द्रमा, सोम, वरुण, अर्क (सूर्य), सविता, अमृत, यज्ञ का उद्गाता, सामवेद, भरत (धारण-पोषण करने वाला), वाचस्पति, रस, दीक्षा, पशु, मनुष्य, ज्येष्ठ-श्रेष्ठ, समिध (अग्नि), प्राणो वै रेत:, रुद्र, वसिष्ठ (जो अतिशय रूप से धर्मकार्यों में बसने वाला), वाणी, स्वर (शब्द) आदि हैं। ये सब अपने-अपने स्थान पर प्राण तत्व हैं। जहाँ जिसका प्रसंग होगा वहाँ प्राण का अर्थ उसी आधार पर होगा।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आर्यो! धर्म रक्षा-धर्म प्रचार के लिये अब आगे आओ।

परोपकारिणी सभा अपने सर्व सामर्थ्य से ऋषि मिशन की सेवा में जुटी है। आर्यधर्म पर वार करने वालों का उत्तर देने के लिए परोपकारिणी सभा हर घड़ी तैयार रहती है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पीठ की स्थापना करके सुयोग्य विद्वान् को अरबी उर्दू के विद्वान् तैयार करने के लिये नियुक्त कर दिया। अब सभा के पास पढ़ाने वाले हैं। लगनशील सुयोग्य युवक तथा सेवानिवृत्त अनुभवी आर्य विद्यार्थी यहाँ तीन-तीन मास, छ:-छ: मास तथा वर्ष-दो वर्ष रहकर अरबी आदि पढ़कर पं. धर्मभिक्षु जी, पं. रामचन्द्र देहलवी जी तथा पं. शान्तिप्रकाश जी के रिक्त स्थान की भरपाई करें। इस पुण्य कार्य में दानी तथा समाजें सभा को उदारता से दान देकर सहयोग करें।

नवीन प्रकाशन का परिचय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय के द्वारा प्रेरणास्पद व भक्त्योत्पादक **कैलेण्डरों** व **स्टीकरों** का नवीन प्रकाशन किया गया है।

कैलेण्डर - (क) महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ- इसमें महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित धार्मिक-व्यवहार से लेकर ईश्वर-भक्ति तक ले जाने वाले प्रेरक-वाक्यों का संग्रह किया गया है।

(ख) सन्ध्या सुरभि- इसमें महर्षि दयानन्द जी की भक्त्योपादक वाक्य-रचना का आधार लेकर वैदिक सन्ध्या के भावों को सुरभित किया गया है।

(ग) गायत्री मन्त्र- इसमें गायत्री मन्त्र के अनेक विशेष अर्थों के द्वारा ईश्वर के गुणों के प्रति प्रेरित किया गया है। साथ में मन्त्र का भाव कविता रस में भी बाँधा गया है।

स्टीकर- इसमें परमात्मा के मुख्य नाम **ओ३म्** व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र को विशेषत: प्रकाशित किया गया है।

सभी आर्यजनों को ये नवीन प्रकाशन अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

उत्साही पुरुष को क्या नहीं प्राप्त हो सकता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४६**

संस्था - समाचार

१६ से २८ फरवरी २०१४

आर्यजगत् की वह संस्था जिसे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने करकमलों से स्थापित किया उसी परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान के अन्तर्गत होने वाली गतिविधियों का वर्णन इस लेख में कर रहा हूँ। प्रिय पाठको! आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि यह आश्रम एक ऐसा स्थल है जहाँ प्रतिदिन सुबह-शाम यज्ञ व सत्संग आदि कार्यों का सम्पादन सफलतापूर्वक होता है। यज्ञ न केवली अपनी उन्नति, अपनी रक्षा, यश, ऐश्वर्य के लिए बल्कि प्राणिमात्र के हितार्थ किया जाने वाला एक सर्वश्रेष्ठ कार्य है। वेद यज्ञ की स्तुति करता हुआ कहता है कि- **यज्ञो वै भुवनस्य नाभिः।** अर्थात् इस जगत् का आधार, मूलकेन्द्र यज्ञ ही है। जैसे- हमारे शरीर का केन्द्र नाभि है। यदि हमारी नाभि थोड़ी हिल जाये अर्थात् अपने स्थान से हट जाये तो कितना कष्ट, दु:ख, दर्द सहन करना पड़ता है। पेट का सारा तन्त्र अव्यवस्थित हो जाता है, ठीक वैसे ही यदि यज्ञ रूपी नाभि को करना बन्द कर देंगे तो संसार के अन्दर अव्यवस्थाएँ, हिंसाएँ, दूषित पर्यावरण, लोभ-लालच आदि अनेकों दुर्गुण स्वत: पनपने लगेंगे।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी '**सत्यार्थप्रकाश**' के तृतीय समुल्लास के अन्दर लिखते हैं कि जब तक राजे-महाराजे होम करते और कराते थे। तब तक यह आर्यावर्त्त देश दु:खों से रहित और सुखों से परिपूरित था और यदि अब भी वैसा करें तो यह देश वैसा ही हो जायेगा। इसी भावना को समक्ष रखते हुए आश्रमवासी, ब्रह्मचारी आदि सभी लोग प्रात: व सायं यज्ञ कार्य को निष्पन्न करते हैं।

यज्ञोपरान्त रविवारीय सत्संग में पधारे धार्मिक सज्जनों, छात्र व छात्राओं को छ: शत्रुओं के दमन विषय पर '**आचार्य कर्मवीर जी**' ने व्याख्यान दिया। अथर्ववेद के (८/४/२२) ''**उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्......।**'' इस मन्त्र का प्रकाश करते हुए आचार्य जी ने बताया कि मनुष्यों को कहीं-कहीं पशु, पक्षियों के माध्यम से जीवन के रहस्यों को समझने और दुष्प्रवृत्तियों से बचने का प्रयास करते रहना चाहिए। इस मन्त्र में छ: पशु-पक्षियों की चालों को गिनाकर मनुष्य को प्रेरणा दी गई है कि तू इन चालों को छोड़। सबसे पहले कहा कि उलूकयातुम् अर्थात् उल्लू की चाल। उल्लू एक ऐसा पक्षी है जिसे अन्धकार से गहन प्रेम होता है। उसे उजाले से प्रेम नहीं होता है। वह अन्धेरे में निर्द्वन्द्व विचरण करता है और प्रभात होते ही न जाने किन खण्डहरों में जा छिपता है तो हमें ऐसी वृत्ति को छोड़ देना चाहिए। अन्धेरे से प्रेम करना हितकर नहीं होता है। क्योंकि प्रकाश उन्नति व प्रगति का प्रतीक होता है। प्रकाश में ही रहकर व्यक्ति अपना कार्य सम्पन्न करना चाहता है। तभी तो शतपथ ब्राह्मणकार ने कहा- **तमसो मा ज्योतिर्गमय।** हे प्रभु! हमें अन्धकार से हटाकर प्रकाश (ज्योति) की ओर ले चलो।

अन्धकार-प्रियता को सम्बोधित करते हुए महाराज भर्तृहरि जी ने लिखा है कि- **नोलूकोऽप्यविलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्।।** अर्थात् यदि उल्लू को दिन में नहीं दीखता तो इसमें सूर्य का क्या दोष है?

दूसरे पद की व्याखा करते हुए आचार्य जी कहते हैं कि **शुशुलूकयातुम्।** अर्थात् भेड़िये की चाल को व्यक्ति अपने हृदय, अन्त:करण से निकाल देवें। भेड़िये की दूषित मनोवृत्ति यह होती है कि वह निर्बल को तो दबाता है परन्तु सबल के आगे झुक जाता है। ऐसे ही व्यक्ति को कभी नहीं करना चाहिए यह वीरता एवं शक्तिमत्ता का कार्य नहीं अपितु कायरता और भीरुता का सूचक होता है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका स्वभाव यही बन जाता है, छल करना, असत्य बोलना, निर्बलों को सताना उनका जीवन पाशुविक वृत्ति वाला हो जाता है। तो ऐसी वृत्ति को छोड़ देना चाहिए। तीसरा कहा '**जहि श्वयातुम्**' अर्थात् कुत्ते की चाल को छोड़ देना चाहिए। कुत्ते जैसी चाटुकारिता, चापलूसी नहीं करनी चाहिए। स्वाभिमानी जीवन जीना चाहिए किन्तु विनम्रता का स्थान जीवन में रखते हुए ही अग्रसर की ओर बढ़ना है।

योग-अवस्था में मन:- प्रात:कालीन यज्ञोपरान्त सत्संग में पूज्य **स्वामी विष्वङ् जी महाराज** के द्वारा योग में मन किसे कहा जाता है? योग के अन्दर मन की क्या-क्या अवस्थाएँ होती हैं? किस स्थिति में मन कैसे कार्य करता है? इत्यादि अनेकों सूक्ष्म विषयों पर सत्संगियों को बहुत ही सरलता से समझाया जाता है। एकाग्र अवस्था की चर्चा करते हुए स्वामी जी कहते हैं कि एकाग्र अवस्था में ही व्यक्ति को विवेक होता है और पूर्ण विवेक के होने से ही वैराग्य होता है। जहाँ विवेक होता है, वहाँ सत्यता, न्याय, धर्म होता है। जो ज्ञान की परिपूर्णता है वही अवस्था वैराग्य है। महर्षि वेदव्यास जी ने योग में ज्ञान की पराकाष्ठा को वैराग्य कहा है और जहाँ ज्ञान की पूर्णता होती है, वहाँ अन्याय, अधर्म नहीं होता। जड़ और चेतन का जिसको पृथक्-पृथक् ज्ञान होता है, वास्तव में वैराग्य उसे ही होता है और जिसको वैराग्य होता है उसको यह संसार ''**वसुधैव कुटुम्बकम्**'' लगने लगता है अर्थात् वह सबको अपना मानने लगता है। उसके लिए फिर पराया कोई नहीं रहता। समत्व की भावना आ जाती है।

''सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास के अन्तर्गत ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियों के कर्त्तव्यों का व्याख्यान करते समय **आचार्य कर्मवीर जी** ने बताया कि इनको मद्य, मांस, गन्ध, माला, खटाई, प्राणियों की हिंसा, अंगों का मर्दन, आँखों में अञ्जन, जूते और छत्र आदि का धारण नहीं करना चाहिए। काम, क्रोध, नाच-गान, बाजा बजाना, धूत आदि कुकर्म सदा के लिए छोड़ देवें। मांस-भक्षण निषेध की व्याख्या करते हुए मनुस्मृति के प्रमाण को उल्लिखित करते हुए बताया कि:-

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातका:।।

अर्थात् मांस-भक्षण प्रसंग में आठ प्रकार के पापियों की गणना की है। (अनुमन्ता) मारने की आज्ञा देने वाला (विशसिता) मांस को काटने वाला (निहन्ता) पशुओं को मारने वाला (क्रयविक्रयी) पशुओं को मारने के लिए मोल लेने और बेचने वाला (संस्कर्त्ता) पकाने वाला (उपहर्त्ता) परोसने वाला (खादक:) खाने वाला, ये सब हत्यारे और पापी माने जाते हैं।

आर्य सम्मेलन व नामकरण संस्कार महोत्सव:- वैदिक सत्संग एवं नामकरण संस्कार का आयोजन १३ व १४ फरवरी २०१४ को ग्राम बनार, जयपुर में किया गया। जिसमें परोपकारिणी सभा से जुड़े हुए श्री मुमुक्षु मुनि जी ने व अन्य विद्वानों ने भी बच्चे को आशीर्वाद प्रदान कर उत्सव को यज्ञ-हवन व भजनोपदेश से और मनोहर बना दिया।

ऋषि बोधोत्सव- २७ फरवरी को ऋषि उद्यान महाशिवरात्री पर्व को बोधोत्सव के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में गुरुकुल के ब्रह्मचारी सोमेश जी, माता उषा बंसल जी व राजेश जी ने भजन गाकर ऋषि कार्यों पर प्रकाश डाला। आचार्य कर्मवीर जी ने इस अवसर पर ऋषि दयानन्द के विशेषतायें बताते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति घटनाओं को देखता है, उसके मन में शंका/प्रश्न भी पैदा होते हैं, परन्तु वह उन प्रश्नों का उत्तर पाने के पुरुषार्थ नहीं करता। प्रश्नों को प्रश्नों के रूप में ही छोड़ देता है। परन्तु महर्षि दयानन्द ने बाल्यकाल में उठे एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिये/सच्चे शिव की खोज के लिये संकल्प किया और उसे जानकर पूरे संसार को बताया। आचार्य जी ने और कई घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए उनेक आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में वानप्रस्थी मुमुक्षु मुनि जी का उद्बोधन व ऋषि उद्यान में अरबी/उर्दु का अध्यापन करा रहे श्री यशोवर्धन जी की कविता भी सुनने को मिली।

तद्दूरे तद्वन्तिके- सायंकालीन यज्ञोपरान्त सत्संग की वेला में ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारियों एवं वानप्रस्थियों के उद्बोधन भी प्राप्त हुए। ब्र. सोमेश जी ने ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा कि ईश्वर कांपता नहीं है, कंपाता है। वह दूर है, वह पास भी है। वह सबके अन्दर भी है और सबके बाहर भी है। जो लोग ईश्वर को जानते हैं, उनके पास हैं और जो नहीं जानते हैं, उनके लिये दूर से भी दूर है। अर्थात् ईश्वर से हमारी केवल ज्ञानगत दूरी है। ब्रह्मचारी सत्यवीर जी ने 'परोपकार' विषय पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया। भर्तृहरि जी के वैराग्यशतकम् के श्लोक को उद्धृत करते हुये आपने बताया कि लोग समझते हैं कि समय बीत रहा है, परन्तु वास्तव में हमारी आयु बीत रही होती है। हम भोगों को नहीं भोग रहे हैं बल्कि हम स्वयं ही भोगे जा रहे हैं। इन्द्रियों कि शक्ति, सामर्थ्य घटती जा रही है। तृष्णा जीर्ण (बूढ़ी) नहीं हुई बल्कि हम ही बूढ़े हो गये। इसलिये जितना अधिक हो सके अपने जीवन को परोपकार में लगाना चाहिये। ब्र. उपेन्द्र जी, प्रभाकर जी व शोभित जी ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। शोभित जी ने क्रान्तिकारी, ऋषिभक्त ''श्याम जी कृष्ण वर्मा'' के जीवन पर प्रकाश डालकर स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी भूमिका के बारे में चर्चा की।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा:- हमारे समाज में बड़े, अनुभवी लोगों के विचारों का बहुत महत्त्व रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धों के अनुभवों को बहुमूल्य समझा जाता है। इन्हीं विचारों को रखते हुये वानप्रस्थी मुमुक्षु मुनि जी ने कहा कि हमारे अभिभावक (माता, पिता या अन्य) सदैव हमारा भला ही चाहते हैं। एक पिता अपने पुत्र को सदैव अपने से अच्छा, श्रेष्ठ ही देखना चाहता है। कभी-कभी हमारे माता-पिता हम पर क्रोध करते हैं, कटुवचन भी कहते हैं, इससे उनके प्रति अपने मन में अश्रद्धा नहीं लानी चाहिये। उनके कटुवचन, उनकी कठोरता भी हमारे हित के लिये ही होती है। ''**सामृतै: पाणिभिर्हन्ति गुरवो न विषोक्षितै:**'' अर्थात् गुरुजन यदि ताड़ना भी करते हैं तो अमृतमय हाथों से करते हैं।

स्वयं को देखें- जब हमारे सामने समस्या आती है तो हम बाहर की चीजों को बदलने लगते हैं, परन्तु हमारी अधिकतर समस्याओं का समाधान हमारे अन्दर ही छिपा होता है। इसके लिये हम स्वयं का निरीक्षण करें और अपने अन्दर की कमियों को ढूंढ़कर निकालें। वानप्रस्थी रमेश मुनि जी ने अध्यात्म सम्बन्धी विचारों को रखते हुये यह भी बताया कि आत्मा का मुख्य उद्देश्य मोक्ष है, परमानन्द को प्राप्त करना है, इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये आत्मनिरीक्षण अति आवश्यक है।

ब्र. अमित आर्य, ब्र. प्रभाकर, ऋषि उद्यान, अजमेर

कोई भी विद्वान् अच्छे गुण, कर्म्म और स्वभाव से विपरीत नहीं हो सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४६

आर्यजगत् के समाचार

१. अभिनन्दन- आर्यसमाज हिरण मगरी, सेक्टर-४, उदयपुर, राजस्थान द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय द्वारा गणतन्त्र दिवस समारोह में आर्यजगत् के समर्पित व्यक्तित्व आर्यसमाज हिरण मगरी के उपप्रधान एवं पुरोहित श्री अनन्त देव शर्मा का अभिनन्दन किया गया।

२. सम्मानित- आर्यसमाज रामपुरा, कोटा (राज.) के मन्त्री डी.पी. मिश्रा ने बताया कि कोटा के आर्य विद्वान्, आर्य समाज के प्रधान श्री शिवनारायण उपाध्याय को ओड़िशा में गुरुकुल हरीपुरा जिला नुवापाड़ा में गुरुकुल के आचार्य श्री सुदर्शन जी द्वारा ३१००/- नकद एक शॉल ओढ़ाकर तथा श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

३. कम्बल वितरित- आर्यसमाज नेहरू ग्राऊण्ड, न्यू टाऊनशिप, फरीदाबाद तथा दयानन्द शिक्षण संस्थान की अध्यक्षा डॉ. श्रीमती विमल मेहता द्वारा मकर संक्रान्ति के तत्त्वावधान में विभिन्न मन्दिरों, गुरुद्वारों और सड़कों पर बैठे जरूरतमन्द व्यक्तियों में २५० कम्बल बाँटे गए।

४. सम्मान व अभिनन्दन- चारों वेदों के सतत् अध्ययन के उपरान्त सेवा भावना की जो प्रेरणा मुझे मिली है उसका वर्णन करना कठिन है। उक्त विचार आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी कोटा के सदस्य सुरेशचन्द्र गुप्ता ने आर्यसमाज तलवण्डी द्वारा उनके सम्मान में आयोजित १५ जनवरी २०१४ के एक अभिनन्दन समारोह में व्यक्त किये। ७६ वर्षीय श्री गुप्ता पिछले ३ वर्षों से लगातार वेदों का अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने चारों वेदों का पारायण कर लिया है।

५. शिविर सम्पन्न- मकर संक्रान्ति पर्व पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा (राज.) द्वारा किया गया यज्ञ संस्कृत विद्यालय के अध्यापकों में आध्यात्मिक एवं सामाजिक चेतना जागृत करेगा। यज्ञ पर्यावरण के साथ हमारे जीवन में प्रकाश लाएगा। उक्त विचार श्री प्रदीप चित्तौड़ा सी.ओ. भारत स्काउट एवं गाइड्स कोटा नले आलनिया स्थित भारत स्काउट गाइड परिसर में संस्कृत अध्यापकों के आवासीय शिविर में व्यक्त किये। आयोजित यज्ञ के मुख्य यजमान श्री प्रदीप चित्तौड़ा, मुख्य अतिथि आर्यसमाज के जिला प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा तथा यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अग्निमित्र थे। इस अवसर पर तिलयुक्त सामग्री से मकर संक्रान्ति पर्व की विशेष आहुतियाँ दी गई।

६. स्थापना दिवस मनाया- आर्यसमाज खेडा अफगान सहारनपुर ने अपने स्थापना दिवस के ११६वे वर्ष में आयोजित धर्म जागृति महोत्सव में सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। इस अवसर पर सातवीं वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता की प्रथम विजेता को नगद २१०० रुपए का पुरस्कार, दूसरे स्थान पर ११०० रुपये, तीसरे ५०० रुपये, चौथे को २५० रुपये प्रशस्ति पत्र तथा वैदिक साहित्य प्रदान कर सम्मानित करते हुए मेधावी बच्चों का उत्साह बढ़ाया गया।

७. पुरस्कृत- भुवनेश्वर आर्यसमाज के ३७वें वार्षिक उत्सव में पं. कमलेश अग्निहोत्री (अहमदाबाद) और आचार्या डॉ. सुकामा (चोटिपुरा आर्य कन्या महाविद्यालय) को यथाक्रम 'महर्षि दयानन्द पुरस्कार-२०१४' तथा 'शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेद विदुषी पुरस्कार २०१४' द्वारा सम्मानित किया गया।

दीर्घ अर्ध शताब्दी से ओडिशा में वेद, यज्ञ और आर्यसमाज के प्रचार में सतत् कार्यरता माता शन्नोदेवी जी का ७५ पूर्त्ति अमृत महोत्सव आर्यसमाज भुवनेश्वर में सोल्लास सम्पन्न हुआ है। सम्वर्धन सभा में माता जी को ओडिशा तथा हिन्दी भाषा में सम्पादित 'सुमंगली' अभिनन्दन ग्रन्थ इस अवसर पर अर्पित किया गया। माता जी उत्तम सुलेखिका, समाजसेवी, प्रवचिका तथा पुरोहिता के रूप में ओडिशा में यशस्विनी कार्य कर रही हैं।

८. विचार मन्थन- विचार टी.वी. द्वारा निर्मित्त वैदिक कार्यक्रमों का पिछले डेढ़ वर्ष से साप्ताहिक प्रसारण आस्था चैनल पर प्रत्येक शनिवार रात्रि ९.३० बजे से एवं पिछले छः मास से दैनिक प्रसारण आस्था भजन चैनल पर हर रोज रात्रि ८.०० बजे से हो रहा है।

हाल ही में विचार टी.वी. द्वारा आर्य जगत् की सर्वप्रथम परिचर्चा 'विचार मन्थन' का निर्माण किया गया है जिसमें ईश्वर का सच्चा स्वरूप, ईश्वर की उपासना पद्धति, ईश्वर को मानने से लाभ आदि विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इस परिचर्चा का विशेष प्रसारण सुप्रसिद्ध आस्था चैनल पर दि. १५ मार्च २०१४ से प्रत्येक शनिवार रात्रि ९.३० बजे से एवं इसका पुनः प्रसारण आस्था भजन चैनल पर दि. १६ मार्च २०१४ से प्रत्येक रविवार रात्रि ८.०० बजे से होगा।

शोक समाचार

९. आर्यजगत् के उपदेशक पं. रूपचन्द्र दीपक, प्रधान, आर्यसमाज शृंगार नगर, लखनऊ के पिता जी श्री कल्याणसिंह का गाजियाबाद में ७ फरवरी २०१४ को ९५ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वैदिक विधि से गाजियाबाद में ८ फरवरी २०१४ को अन्त्येष्टि कर्म और १० फरवरी २०१४ को शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ।

ऋषि उद्यान स्थित स्वामी ओमानन्द संन्यास भवन

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ मार्च , २०१४ RNI. NO. ३९५९/५९

ऋषि उद्यान स्थित सरस्वती भवन का नवीनीकरण

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@ © MITTAL 9829797513